छोटी मछली बड़ी मछली

श्रीराम मीना



श्रीराम मीना मध्य प्रदेश के जाने-माने लेखकों में से एक हैं। हिन्दी साहित्य सृजन में कविता, गजल, व्यंग्य एवं लघुकथा के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान है।

लघुकथा गत कई वर्षों से हिन्दी जगत में अपना स्थान और अपनी अलग सहचान बनाती आ रही है। श्रीराम मीना ने गत वर्षों में अनेक लघु-कथाएं लिखीं जिनमें से कुछ लघुकथाएं इस संग्रह में ली गई हैं।

संपादित लघुकथा-संग्रह तो अक्सर प्रकाशित होते आ रहे हैं किन्तु व्यक्तिगत लघुकथा-संग्रह बहुत ही कम संख्या में पाठकों तक पहुंच पाये हैं। श्रीराम मीना का यह लघुकथा-संग्रह 'छोटी मछली-बड़ी मछली' उनकी विशिष्ट लघुकथाओं का संग्रह है। आशा है पाठक इसे लघुकथा क्षेत्र में एक विशेष स्थान प्रदान करेंगे।

—प्रकाशक

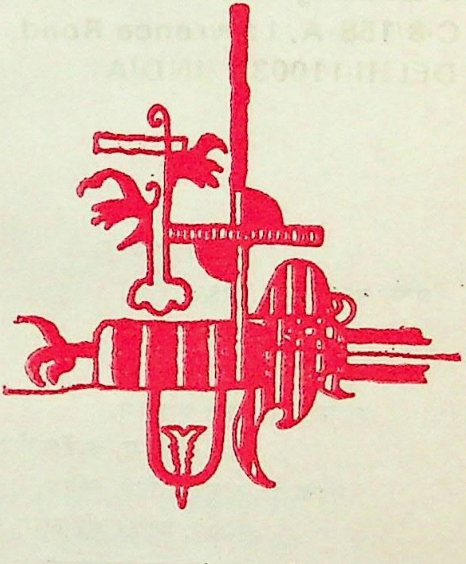
श्री
ए
ल,
ाष
लघ
ना
है
ाएं
ली
सं
ते अ
हुत
राम
कली
ा सं
एक

छोटी मछली–बड़ी मछली

पंकज प्रकाशन
लारेंस रोड, दिल्ली-110035

छोटी मछली-बड़ी मछली

(लघुकथा-संग्रह)



श्रीराम मीना

ISBN-81-7068-021-2

Pankaj Prakashan
C-8/158-A, Lawrence Road,
DELHI-110035 (INDIA)

मूल्य : 20·00 रुपये
प्रथम संस्करण : 1986
आवरण : एड-वेन्चर

प्रकाशक : **पंकज प्रकाशन,**
सी-8/158-ए, लारेंस रोड, दिल्ली-110035
मुद्रक : ठाकुर प्रिंटिंग सर्विस,
3897, शान्ति मोहल्ला, गांधी नगर, दिल्ली-31

CHHOTEE MACHHLEE · BARHEE MACHHLEE
(Hindi Short Stories) written by Shriram Meena
Price : Rs. 20 00

हिन्दी के प्रथम लघुकथाकार
राष्ट्रकवि स्व० पं० माखनलाल चतुर्वेदी को
सादर सप्रेम भेंट

दो शब्द

मेरे पहले लघुकथा-संग्रह 'नीमचढ़ी गुरबेल' का विज्ञ-पाठकों ने इतना स्वागत किया कि मुझे फिर से दूसरा संग्रह देने को बाध्य होना पड़ा।

मेरे पिछले लघुकथा-संग्रह की देश की तमाम पत्र-पत्रिकाओं में जो समीक्षाएं हुईं उनसे भी मुझे काफी प्रोत्साहन मिला।

वैसे मैं मूल रूप से कवि हूं। मुझे लघु-कथाकार तो मेरे मित्रों और कृपालु पाठकों ने बनाया है। तो—

तेरा तुझको सौंपते क्या लागे मेरा…

लीजिए इसे भी स्वीकारिए।

—श्रीराम मीना

अनुक्रम

अजगर-कथा

एक अजगर दिल्ली से कन्याकुमारी के लिये चला। रास्ते में उसे कई लोग मिले पर उसने उन पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। चूंकि वे सब "आम" थे। उसे केवल तीन आदमी विशेष दिखे, जिसे उसने गौर से देखा।

पहले उसे एक दुबला पतला, सींकिया, काला-कलूटा मजदूर मिला, जिसके हाथ में लाल झंडा था। अजगर ने उसे गौर से देखा "इसमें हड्डी के सिवा कुछ है ही नहीं, इसे कैसे निगलूं, चलो छोड़ो।" और वह आगे बढ़ गया।

फिर उसे एक मटमैला किसान दिखा, जो अपने खेत में हल चला रहा था। वह खासा मोटा ताजा था, पर मिट्टी में लिपटा हुआ था। अजगर ने उसे भी सरसरी नज़र से देखकर निगलने की बात नहीं सोची।

इसके बाद उसे एक साहित्यकार मिला। उसने उस साहित्यकार को गौर से देखा। उसे वह साहित्यकार शातिर दिखा। उसका दिमाग शरीर से भारी था। अजगर ने सोचा "इसे जरूर खाना चाहिए क्योंकि इसके दिमाग को खाने से मेरा दिमाग बढ़ जावेगा। अजगर ने गहरी सांस लेकर उसे खींच लिया। साहित्यकार हाथ जोड़ रहा था।

"हे शिवभक्त अजगरजी, मैं तो गरीब साहित्यकार हूं ? बमुश्किल पेट भरता हूं, बाल बच्चे भूखों मर जायेंगे। मुझे छोड़ दो।"

अजगर बोला, "तो वादा करो कि तुम राजनीति और मुझ पर

व्यंग्य नहीं लिखोगे ।" साहित्यकार के वादा करते ही अजगर ने उसे छोड़ दिया । □

अदालती-सच

यूं तो वह कई बार, 'झूठ' के अलावा भी 'सच' बोला है, पर आज उसे लग रहा था कि वह कुछ अजीब 'सच बोल रहा है। ऐसा सच उसने पहले कभी नहीं बोला पर आज उसे यही 'सच' बचा सकता था। यह 'सच' क्या होता है ? इसकी पूरी जानकारी उसे उसके वकील ने दे दी थी। उसने अदालत के कटघरे में खड़े होकर वह 'सच' गीता पर हाथ रख कर सच ईमान से बोल दिया और वह छूट गया।

यह 'सच' उसके जीवन-मरन से जुड़ा था। उसके भीतर 'सच में लिपटी 'आत्मा' ने उस पर जोर से थूका था। वह क्या करता ? यदि वह 'आत्मा का सच' बोलता है तो आत्मा नंगी होती है। और यदि वह आत्मा की बात मानता है तो खुद नंगा होता है। उसने एक साथ खुद को और 'आत्मा' को नंगा कर दिया था। पर न्याय कह रहा था "तुम दोनों के पास एक-एक अदद लंगोटी है। वह भी तुमसे एक न एक दिन वकील छीन लेगा। फिर लंगोटी 'सत्य' नहीं है। 'सत्य' तो कुछ और ही है जिसे तुम कभी नहीं पहचान सकते। तुम नंगे आये हो नंगे ही वापिस जाना है, फिर 'सत्य की लंगोटी' का क्या गम ?" □

अंधा मोड़

हर मोड़ पर सावधानियां लिखी थीं 'आगे अंधा मोड़ है ! सावधानी से धीमे चलें ?' लेकिन मेरे भीतर अंधी भावनाएं खलबली मचा रहीं थीं। मैं तेज़ी से सावधानी पूर्वक तेज़ रफ्तार से चला जा रहा था। फिर दूसरे मोड़ पर लिखा था 'कृपया धीमे चलिये घर पर आपके बच्चे आपका इन्तजार कर रहे हैं।' मेरी रफ्तार सहसा कम हुई। तीसरे मोड़ पर पहुंचा तो लिखा था 'फूलों की सुन्दर घाटी आपका इन्तजार कर रही है।' फूलों की घाटी में मुझे मोहब्बत खिलखिलाते हुए मिली। चौथे मोड़ पर मुझे एक नंगी औरत खुला आमंत्रण दे रही थी। मेरे शरीर की ऊर्जा कुछ ज्यादा बढ़…। मैं पूरे जोश के साथ चल पड़ा…। थोड़ी ही देर में, मैं उसमें पूरा समा गया। बताऊं वह औरत कौन थी ?—'मौत'—आप ठंडे पड़ गये होंगे—मेरी तरह, हैं ना… □

अफ़सरी दिमाग

इधर नये डिप्टी-कलेक्टर मिश्रा जी जब से आये हैं, जिले के पटवारियों में हड़कम्प मच गया है। किसी को चार्जशीट, किसी को मुअत्तिल, वे आये दिन करते ही जा रहे थे, सो सारे इलाके के पटवारियों ने एक मीटिंग बुलाकर इस मुद्दे पर चर्चा करना मुनासिब समझा।

एक दिन सारे क्षेत्र के पटवारी मिले और बचाव की नई-नई योजनाएं बनाने लगे। पर इस योजना को कार्यरूप में परिणित कौन करे…? इसके लिए कोई भी मैदान में नहीं उतरना चाहता था चूंकि उसका मैदान में उतरना यानी शहीद होना भी निश्चित था। पंडित रामदीन पटवारी ने कहा, "दोस्तों, मैं इसे कार्यरूप में परिणित करने को तैयार हूं ! सारे पटवारी खुश थे कि हम बचे और अब रामदीन बस चला ही समझो ! बहुत कांइयां भी है सो अब नये अफसर के अगाड़ी देखते हैं कैसे टिकता है ?

एक दिन रामदीन पटवारी ने साहब बहादुर से कहा, "सर ! आज उस गांव के दौरे पर चलना है, आपके जाने से ही वहां की समस्या सुलझ सकती है।" साहब तैयार हो गये। गांव जाने की कोई पक्की सड़क तो थी नहीं कच्चे रास्तों से ही खेतों से गुजरते जाना था। सो पटवारी रामदीन के बतलाये मार्ग पर जीप जा रही थी कई चनों के खेतों में से जीप सरपट दौड़ी जा रही थी, एकाएक एक खेत में कुछ लोगों ने जीप को रोक लिया और कहने लगे, "ये क्या तुम्हारे बाप का खेत है जो फसल चौपट करते हुए चले जा रहे हो ? ड्राइवर ने जीप खड़ी कर दी, तब तक चार-छै लठैत लट्ठ लेकर ड्राइवर की ओर बढ़े और ड्राइवर को एक दो हाथ जमा दिये। और बाजू में बैठे डिप्टी कलेक्टर मिश्रा जी को भी दो-चार हाथ जमा दिये।

तब तक पीछे बैठे छोटे अधिकारीगण बीच-बचाव के लिए दौड़ पड़े। पर वे ग्रामीण मान ही नहीं रहे थे। जब उन्होंने रामदीन पटवारी को देखा तो हाथ जोड़ कर बोले, "पटवारी साहब ! माफ करियो हमें का मालूम कि जा गाड़ी आपकी है। हम से भारी गलती हो गई।" पटवारी रामदीन डांटते हुए बोला, "हरामजादो तुम्हें मालूम नहीं ये कलेक्टर साहब की गाड़ी है, और तुमने उन पर हाथ उठा दिया है। अब तुम्हारे हाथ मैं काट लूंगा। लठैत किसान गिड़गिड़ा कर पटवारी रामदीन के कदमों में गिर गये और बोले, 'माई-बाप अब

तुम ही बचा सकते हो। हम से अनजाने में पाप हो गया है।" डिप्टी-कलेक्टर मिश्रा जी पिट-पिटाकर यह नजारा देख रहे थे। पटवारी रामदीन को किसान भगवान मानते हैं। इसके इशारे पर ये लोग क्या-क्या कर सकते हैं, उन्होंने धूल झड़ाते हुए कहा, "चलो माफ कर दिया भाई, तुमने गलती से और नासमझी से ही तो यह घृणित कार्य किया है। जान-बूझकर करते तो चक्की पिसवा देता।" अब साहब का चेहरा देखने लायक था। वे गांव भी नहीं जाना चाहते थे, पर पटवारी रामदीन के विशेष आग्रह पर उन्हें जाना ही पड़ा।

जब साहब गांव पहुंचे तो गांव के पटेल फूल-मालाएं लिए खड़े थे। फूल-मालाओं से उन्हें तथा उनकी जीप कों गांव वालों ने लाद दिया था। शाम तक एक गठरी नोट भी इकट्ठा करके पटेल ने पटवारी रामदीन को सौंप दिये। पटवारी रामदीन ने उस गठरी को साहब के चरणों में रख दिया था। साहब गदगद हो गये थे गांव वालों के स्नेह से और पटवारी रामदीन के प्रभाव से वे सोच रहे थे "गांवों का असली कलेक्टर तो पटवारी रामदीन ही है।" गांव से लौटकर उन्होंने पटवारी रामदीन का प्रमोशन रेवेन्यू इंस्पेक्टर के रूप में कर दिया था और नये पद के लिए बदली भी जरूरी थी। पटवारी रामदीन हाथ जोड़कर कह रहा था, "माई-बाप मुझे यहीं रहने दो! अन्यत्र जाने से मेरी खेती किसानी का सत्यानाश हो जायेगा। मुझें प्रमोशन नहीं चाहिए साहब।" साहब कह रहे थे, "रामदीन देखो प्रमोशन पर तो बाहर जाना ही पड़ेगा। बस चार-छै महीने में फिर यहीं बुला लूंगा। अरे भाई, अभी यहां कर दूंगा तो कई लोग चिल्लायेंगे।" पटवारी रामदीन जीत कर भी हार महसूस कर रहा था। और साहब बहादुर हार कर भी जीत महसूस कर रहे थे। क्षेत्र के सारे पटवारी सोच रहे थे ये कैसा साहब है? जिस पटवारी ने उन्हें पिटवा दिया था, उसी को प्रमोशन दे रहा है। इन अफसरों का भेजा समझ ही नहीं आता काहे का बना होता है?

अहम्-ब्रह्मास्मि

एक बार जंगल के जानवरों ने हाथी को जंगल का राजा बना दिया। हाथी ने अपने राज्य में कई मंदिर बनवा दिये। रामराज्य लाने की घोषणा कर दी गई पर रामराज्य जब भी आने की कोशिश करता, शेर बकरी को खा जाता था।

शेर का सभी जंगली जानवरों ने पूर्ण बहिष्कार कर दिया तथा राजद्रोही के रूप में उसे पिंजरे में कैद कर दिया। एक दिन एक सियार ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। शेर बाहर निकल आया। इस बार उसने सबसे पहले हाथी पर धावा बोला। उस वक्त हाथी सो रहा था। शेर ने उसे मार डाला और यह घोषणा कर दी कि हाथी ने आत्महत्या कर ली है। उसकी अन्तिम अभिलाषा यह है कि उस जंगल का राजा मेरे बाद शेर ही बनाया जाये ताकि रामराज्य जल्दी आ सके। हाथी की अन्तिम अभिलाषा को सबने पूरा करना आवश्यक समझा और एक स्वर से हाथी की जगह शेर को राजा बना दिया। उसके बाद सारे जानवर मंदिर गये और ईश्वर के सामने हाथी की आत्मा की शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करने लगे। पर वहां शेर नहीं आया। पूछने पर कहा, "भाई, मैं आज तक कभी मंदिर नहीं गया और न जाऊंगा। क्योंकि मेरा ईश्वर में विश्वास नहीं है, मैं तो राजा हूं और राजा खुद भगवान होता है।" □

आधुनिक-कर्ण

"आजकल दैनिक पत्रों में त्यागपत्रों की बाढ़ सी आ गई है। अचानक कुर्सी से जन सेवकों को घृणा सी हो गई है, आखिर क्यों ?" मैंने अपने एक मित्र से झेंपते हुए पूछ ही लिया। वे कुछ रूठी हुई मुस्कराहट से बोले, "भाई कविराज अब हम भी कर्ण की तरह सब कुछ दान करना चहाते हैं, और अपना सारा जीवन जन सेवा में खपा देना चाहते हैं। संगठन को मज़बूत करने में हम अपने हाथ और दांत दोनों कमज़ोर करने से भी नहीं चूकेंगे।" मैं हाथ का मतलब तो समझ गया, पर 'दांत' का मतलब नहीं समझा, और इसका मतलब उन्हीं से पूछने लगा। वे गम्भीरता से बोले, "मेरे बौड़म मित्र, अफसर होकर भी नहीं जानते ? मन्त्री और अफसरों के दांत बहुत शक्त और खूनी होते हैं। हड्डियां चबा-चबाकर उनकी धार बहुत तेज हो गई है, इतनी तेज कि भाषण देते वक्त वे जीभ तक को काटकर लहू-लुहान कर देते हैं। हां तो कर्ण ने भी अन्तिम समय मांगने पर अपना सोने का दांत तोड़कर दान कर दिया था। तो हम भी उन्हीं आर्यों की सन्तानें हैं। क्या हम अपने दांत दान नहीं कर सकते ? लोग रक्तदान करते हैं, पर दरअसल दांतों का दान ज्यादा बड़ा होता है।"

मैंने फिर प्रश्न उछाला, "भाई जी तुम अब कुर्सी, कार, बंगला छोड़कर पद यात्रा भी करोगे पर तुम्हारी जगह जो नया चेहरा कुर्सी पर बैठेगा, क्या उसके दांत भी तुड़वाओगे ?" वे बोले "यार, दांत तो उसके टूटेंगे ही क्योंकि वह भी अनाड़ी ही होगा और प्रजातंत्र को चबायेगा भी जरूर। हम उसे ठीक से जनसेवा करना सिखा देंगे। अब

देश में कर्ण से भी बड़े दानी पैदा हो गए हैं। बताइये भाई कर्ण आज के समय में मंत्री होता तो क्या वह मंत्री पद छोड़ सकता था? कदापि नहीं, वह भले ही जान दे देता, पर मंत्री पद नहीं छोड़ता। बताइये हम बड़े कि कर्ण? लेकिन एक बात जरूर है, कविराज, 'हम' युद्ध नहीं हार सकते। भले ही 'चुनाव' हार जायें, समझे। मरते दम तक हम धर्म युद्ध करते रहेंगे।"

मैंने कहा, "मित्र मैं तो तुम्हारी फिलासफी को बिलकुल नहीं समझा, यार जबसे तुम मंत्री भये हो तुम्हारा दर्शन बदल गया है। तुम तो आचार्य से भी आगे निकल गये हो।"

वे हंसे और बोले, "बन्धु वह तो भगवान बन गया है, हम भगवान नहीं हैं, जनसेवक हैं। जनसेवा करके हम भगवान के बाप बन सकते हैं, समझे। हां तुम कोई लेख-वेख मत लिख देना, लिखो तो मेरी फोटो ले लेना, अच्छा "ओ के!" □

आविष्कार ईश्वर का

एक पागल अपने मित्र से बोला, "मित्र, मैं ईश्वर का आविष्कार करना चाहता हूं।" पागल के मित्र ने पूछा, "क्या तुम्हें उसकी आवश्यकता है?" पहला पागल बोला, "नहीं यार! आवश्यकता तो अब उसकी किसी को नहीं है, पर उसका आविष्कार करके मैं मसीहा तो बन ही सकता हूं। भले ही आदमी न रह पाऊं।"

पागल का मित्र बोला, "हां यार, आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जब उसकी किसी को आवश्यकता नहीं रही, तब उसका आविष्कार करना तो पागलपन होगा?

पागल बोला, "मित्र, उसकी आवश्यकता दूसरों को नहीं है तो क्या, मुझे तो उसकी आवश्यकता है। मैं उसका आविष्कार करूंगा, फिर उसे खूब भुनाऊंगा, बोल मेरा आॉइडिया कैसा है ?"

मित्र, इतनी जोर से ठहाका लगाकर हंसा कि पागल रोने लगा। □

इण्टरव्यू

एक कम्पनी में कुछ पद खाली थे। नोटीफिकेशन रोजगार कार्यालय भेजा गया "हमारी कम्पनी में पच्चीस पद खाली हैं, जिसमें पांच पद आरक्षित है शेष बीस पद सामान्य आवेदकों के लिए हैं।" सूची कायदे से भेजी गई पर उसमें सिफारिशी लोगों के नाम नहीं आये थे। तो रोजगार अधिकारी को पुनः पत्र लिखा गया, "आप सभी आवेदकों के नाम की सूची भेज दें" दूसरी सूची में उस योग्यता के सभी नाम भेजे गये। जिनका चुनाव (सलैक्शन) होना था पहले ही हो गया। किन्तु उन सभी चार सौ आवेदकों को बुलाया गया। इन्टरव्यू कायदे से हुआ। अंत में बीस आदमी जिन्होंने पिंड दान किया था चुने गये, हां आरक्षित पदों के लिए जरूर ईमानदारी से चुनाव किया गया। उनसे दक्षिणा का कहा तो वे बोले, "हम तो सरकारी दामाद हैं हमें न छेड़ना वरना शिकायत कर देंगे। काश सभी पद रिजर्व होते तो ईमानदारी से तो चुनाव होता। □

इलाज

एक सेठ जी भैंस का दूध पीते थे। उस दूध से उनकी तोंद निकल आई थी, वादी और ब्लड प्रेशर हो गया था, उन्होंने डाक्टर को बताया···!

डॉ० ने कहा, "आप काली भैंस की जगह काली गाय का दूध पिएं।" सेठ जी ने काली गाय खरीद ली और उसका दूध पीने लगे पर उनकी बीमारी घटने के बजाय और बढ़ने लगी। सभी डॉक्टर परेशान थे। तभी एक पड़ोसी ने उन्हें एक अजीब दवाई बताई तो सेठ स्वस्थ्य होने लगा। दवाई कुछ नहीं, परहेज बताया था, "आप दूध बिलकुल नहीं पियें खाना भी कम खायें और काले धन के पैसों की काजू किशमिश भी खाना बन्द करें।" कुछ ही दिनों में सेठजी स्वस्थ्य होने लगे। ❑

ईश्वर का न्याय

ईश्वर के दरबार में—

एक औरत ने सच ईमान से कहा, "महाप्रभु ! मेरा 'चरित्र' इस आदमी ने चुरा लिया है उसे सजा जरूर मिलनी चाहिए।" ईश्वर ने उस आदमी से पूछा, "क्यों तुम्हें कुछ कहना है—सफाई में ?"

वह आदमी बोला, "प्रभु ! इस औरत ने मेरा 'भाग्य' चुरा लिया है ! इसे भी सजा मिलनी चाहिए।

ईश्वर मुस्कराये और बोले, "तुम दोनों के साथ न्याय होगा। जाओ तुम अगले जन्म में पति-पत्नि ने रूप में रहोगे, ताकि तुम वहीं लड़ते रहो और मुझे कभी परेशान न करो।" □

ईश्वर के समक्ष

एक दिन आदमी को गुस्सा आ गया, "मैं ईश्वर की पूजा रोज करता हूं ! फिर भी ईश्वर मेरी कोई बात नहीं सुनता है। लगता है अब ये ईश्वर भी मर गया है ! मैं फालतू में इस पत्थर की मूर्ति को पूजता रहा, प्रेम करता रहा।" पत्थर सहसा कांपने सा लगा और उसमें से आवाज आई, "हे मूर्ख आदमी ! जब तू ही मरने लगा। तब मैं कैसे जिंदा रह सकता हूं ? जब तू खुद अपने आप से प्रेम नहीं कर सकता तब तू दूसरों से प्रेम कैसे करता होगा ? और फिर पत्थरों से भी तू 'प्रेम' करता होगा बात मेरी समझ में ये बिलकुल नहीं आती ?"

आदमी को पत्थर से ये अपेक्षा नहीं थी। वह उठा और पत्थर की मूर्ति की नंगाझोरी लेकर चला गया।

"स्माला बेवकूफ बनाता है। तर्क तो मैं भी तुझसे अच्छे दे सकता हूं। मैं टुकड़ों के लिए टुकड़े-टुकड़े होकर जीता रहूं और तू 'साबुत' रह कर भोग लगाता रहे मंदिर में। मैं अब तुझे भी नंगा करूंगा चल देखता हूं।" □

ईश्वर, जन्म क्यों नहीं लेता ?

एक मां ने आत्महत्या कर ली तो उसकी आत्मा धरती पर ही भटकने लगी। ईश्वर ने उससे पूछा, "क्यों देवी तुमने ऐसा क्यों किया जबकि तुम्हारी उम्र अभी बाकी थी ?" मां ने कहा, "प्रभु मेरा असली बेटा मर गया, तो मैंने 'एक शीरी जुबां' लड़के को गोद ले लिया था। उसने मुझे प्रेम से लूटा और ताजमहल बनवाकर चला गया···? फिर मैंने एक 'गोरे-नारे लड़के को गोद लिया, तो वह 'ईमानदारी से लूट कर'; मेरा कलेजा चीर कर चला गया ! फिर मैंने अपने ही खून को पाला-पोसा बड़ा किया, तो वह उन दोनों से ज्यादा दुष्ट निकला··· ! शराब पीकर मेरे पैर दबाता था और कहता था—मां तुम्हारे पैर बहुत चिकने हैं···! मेरा हाथ फिसलता है···! इसलिए प्रभु मेरे सामने सिवा आत्महत्या के और उपाय नहीं था···?"

ईश्वर ने कहा, "मां तुम वापिस जाओ, मैं तुम्हारी कोख से जन्म लेकर दुष्टों को मारकर, पृथ्वी का भार कम करूंगा।"

मां बोली, "लेकिन वहां हर बाप 'वर्णसंकर' है, तुम जन्म कैसे लोगे···?

□

ईश्वर तुल्य

उस वेश्या के कमरे में भी एक भगवान की फोटो लगी थी। आने जाने वाले मर्दों के कमरों में भी औरतों की फोटो लगी थी।

जब वे सारे मर्द कोठे से निकल कर अपने-अपने घर पहुंचे तो सबकी पत्नियों के कमरों में भी वही भगवान मुस्करा रहे थे। उनका नशा हवा हो गया था। हर मर्द को अपनी औरत वेश्या जैसी लग रही थी। लेकिन हर पत्नि को अपना पति परमेश्वर जैसा लग रहा था…? वेश्या को हर ग्राहक ईश्वर तुल्य था। लेकिन किसी भी मर्द को आज तक कोई भी औरत या पत्नी ईश्वर तुल्य नहीं मिली।

आज तक ऐसा कोई मर्द पैदा नहीं हुआ जो किसी वेश्या को भी ईश्वर-तुल्य मान ले? □

एक मिनट का मौन

एक दिन एक बच्चा नदी की रेत में चांद और सूरज के चित्र बना रहा था तभी बांध का पानी आया और बच्चे को बहा ले गया। चित्रों पर पानी की लहरें नाचने लगीं। बाढ़ उतरने के बाद बच्चा नहींमिला पर चांद सूरज के चित्र वहां बरावर दीख रहे थे। सूरज दिन भर पसीने-पसीने होता रहा। चांद रात भर पंखा झलता रहा। बच्चा मुर्गे की बांग पर भी नहीं उठा। सूरज बड़ी मुस्तैदी से बच्चे को ढूंढ़ने नदी के किनारे आया और एक मिनट का मौन रख कर चल दिया। □

एक ही सिक्का

पाप-पुण्य आपस में लड़ रहे थे। दोनों अपने आपको एक दूसरे से श्रेष्ठ बता रहे थे। पुण्य कह रहा था श्रेष्ठ मैं हूं। पाप कह रहा था मेरे ही कारण तेरा अस्तित्व है। पाप है इसलिए पुण्य है। 'पाप' नहीं होता तो 'पुण्य' को कौन पूछता ? पाप पुण्य को लड़ते देख 'धर्म' को चिन्ता हुई और 'अधर्म' को भी। उन्होंने दोनों को सलाह दी कि वे 'ईश्वर' के पास जाकर इसका निर्णय करायें। वे लोग ईश्वर के दरबार में पहुंचे और अपनी समस्या बताने लगे। ईश्वर ने एक रुपये का चांदी का सिक्का उठाया और टॉस करने लगे। 'पुण्य' चित्त-पट में जीत गया था। वह खुश था। तब ईश्वर ने कहा, "भाइयो, पाप-पुण्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अतः श्रेष्ठ तुम दोनों नहीं रुपया है। लोग रुपया देखते हैं चित्त-पट नहीं देखते। क्योंकि रुपये में मेरा निवास है। उस दिन से "पाप-पुण्य" रुपये को ईश्वर मानकर पूजने लगे। अब रुपया ईश्वर से श्रेष्ठ हो गया था। □

एक ही स्रोत

वे तीनों भाई-बहन पढ़े-लिखे बेरोजगार थे। बिना नौकरी के घर बामुश्किल से चला रहे थे। बहन टी० बी० से ग्रसित थी। उसका

इलाज भी कैसे करवाया जाये ? तो बड़ा भाई कहीं गया और सौ रुपये लेकर हंसता हुआ आ गया।

आठ दिन गुजर हो गया।

फिर दूसरा भाई जो कुछ छोटा था, वह भी कहीं गया और सौ रुपये लेकर घर आ गया। बड़े भाई ने छोटे भाई से पूछा, "पैसे कहां से लाया ? चोरी करके ?" छोटा भाई बोला, "मैं भी वहीं से लाया हूं जहां से आप लाये हैं।"

बड़ा भाई बोला, "तूने भी नसबन्दी करवा ली ! तू तो अभी कुंआरा है। तुझे अभी नसबन्दी नहीं करवानी थी।" बहन ने सुना और वह सौ रुपये की अभिलाषा लिये सदा के लिए सो गई। □

कलयुग का प्रभाव

विश्वामित्र ने कलियुग में भी किसी शिष्य को 'राम' जैसा बनाने की प्रतिज्ञा की। एक बालक उन्हें ऐसा मिल ही गया। उन्होंने उसे शस्त्र से लेकर राजनीति सभी की शिक्षा दी। शिष्य अब सब गुणों में निपुण हो गया था। एक दिन विश्वामित्र ने कहा, "वत्स तुम्हें हमारे समाज से भ्रष्टाचार रूपी राक्षसों को भगाना है, यह कार्य तुम शीघ्र करो।" 'राम' ने कहा, "गुरुदेव भ्रष्टाचार नीचे से नहीं ऊपर से शुरू होता है। अतः इसे नीचे से नहीं मिटाया जा सकता। इसके लिए मुझे चुनाव लड़ना होगा, फिर मंत्री बन कर शीघ्र मिटा दूंगा।"

विश्वामित्र ने अपने प्रभाव से राम को विधायक का चुनाव जितवा दिया और जुगाड़ लगा कर मंत्री भी बनवा दिया। फिर गुरु ने कहा, वत्स शीघ्रता करो अपने संकल्प को जल्दी पूरा करो।" 'राम' ने कहा

"गुरुदेव ये तो और ऊपर से यानी दिल्ली से शुरू होता है। वहां जाना होगा।" 'राम' को विश्वामित्र ने दिल्ली भिजवा दिया। वहां जाकर 'राम' ने गुरुदेव से कहा, "सर यह समस्या तो अन्तराष्ट्रीय है।" विश्वामित्र ने प्रण किया, "अब मैं किसी को भविष्य में राम नहीं बनाऊंगा। क्योंकि यहां बनाता 'राम' हूं पर वह रावण बन जाता है। यह कैसा कलियुग का प्रभाव है?" □

कहानी या कालपात्र

बेटे का बेटा, यानी नाती—बूढ़े से कहानी सुनने की ज़िद कर रहा था। बूढ़ा बोला, "परियों की सुना दूं।" लड़का बोला, "नहीं बाबा, वो तो तुम रोज ही सुनाते हो। आज कोई नई कहानी सुनाओ।" बूढ़ा सोचने लगता है···नई कहानी इसे कहां की सुनाऊं। बूढ़ा फिर आंख मूंदे सोचने लगता है। लड़के को थर्मल-प्लांट की ऊंची चिमनी दिखती है। वह चहक पड़ता है।

बूढ़ा चौंक जाता है। फिर चिमनी को देखकर उसे अपनी कहानी याद आ जाती है। उसकी आंखें भर आती हैं। वह रो पड़ता है। बेटा, बाबा को रोते देख चुप हो जाता है।

बूढ़ा संयत होकर कहता है, "बेटे मैं तुझे उस कारखाने की कहानी नहीं सुना सकता. क्योंकि उसकी कहानी से मेरी कहानी उलझी है।"

लड़का कुछ नहीं समझता। बूढ़ा मन-ही-मन पूरी कहानी फिर से याद करता है···

कैसे हमें, हमारे गांव वालों को वहां से हटाया गया था। उसका

वह घर वो आंगन वह आम का पेड़ डोज़र से गिराये गये थे; पुलिस की मौजूदगी में। पूरे गांव का सपना खत्म हो गया था।

बाप-दादों का सपना अब कहां बचा है? गरीब तब भी थे, पर उनका जीवन ऐसा नहीं था। जैसा अब हो गया है। घी दूध सब्जी, सब खूब पैदा करते थे और खाते पीते थे। खाते अब भी हैं पर क्या...? बेटा थर्मल प्लांट कारखाने में काम करता है यह नाती उसी का लड़का है। यह क्या जाने मैं भी जब इसके बराबर था तब परियों की और राजा रानी की कहानी खूब सुनता था, अपने दादा से, पर मुझे उस समय ये चिमनी दिखी ही नहीं। दरअसल थी नहीं। होती तो शायद मैं भी इसी की तरह कहानी पूछता।

आस-पास के गांव के लोग सब कारखाने में घुस गये। औरतें नहीं घुसी थीं, पर कारखाना खुद औरतों में घुस गया। अब गांव की हर औरत एक थर्मल प्लांट है। पावडर लगा लगाकर चमक रही हैं बिजली सी। पर भीतर से अन्धेरे कुएं जैसी हैं। लोगों ने 'धर्म' भी छोड़ दिया और 'कर्म' भी।

'मर्म'—मर गया है।

यदि इसी तरह गांवों को उद्योगों से जोड़ती रही सरकार, तो बापू का गांव वाला भारत कैंसर-वार्ड या टी. डी. सेंटर बन जायेगा। उसमें से क्या निकलेंगे...भगवान ही जाने? फिर यहां भगवान कभी पैदा नहीं हो सकते।

तभी उसके नाती ने बूढ़े को हिलाया, "बाबा क्या हो गया तुम्हें? अरे, तुम तो रो रहे हो बाबा?" और बच्चा भी रोने लगा बाबा ने आंसू पोंछे चुप हो गया। बच्चा भी हंसने लगा।

पर बूढ़ा हंसा कभी नहीं...? उसकी हंसी थर्मल प्लांट की चिमनी के नीचे धरी है। बूढ़ा मर गया...। पर कभी-कभी वह चिमनी हिलती है।

जनरल मैनेजर को सपने में गांव वाले लट्ठ ले-लेकर आते दिखते हैं उसे नींद नहीं आती चूंकि प्लांट एशिया की धड़कन जो है ? □

काग भगोड़े

एक खेत में चने की फसल खडी थी, किसान ने पशु-पक्षियों से फसल को बचाने के लिए बीच खेत में एक बिजूका सा काग भगोड़ा खड़ा कर दिया था। काग-भगोड़े को देखकर पशु-पक्षी खेत में नहीं जाते थे, चूंकि वे उसे आदमी समझते थे। पर एक दिन एक बैल जाकर खेत में चरने लगा। उसने बहुत कुछ फसल चर ली थी तभी काग-भगोड़े से रहा नहीं गया और उसने बैल से कहा, "भाई क्या पूरा खेत खा लोगे, मेरी भी इज्जत रखो कुछ।" बैल ने कहा, "वाह ! भाई क्या कहने हैं तुम्हारे, जो पूरे देश को चर गये उनसे तो कुछ कहता नहीं, मेरे पीछे पड़ गया है। 'काग-भगोड़ा' फिर नहीं बोला वो आज तक चुप है···? □

कुत्ता

सेठ जी के घर में एक बहुत पुराना वफादार नौकर है 'घीसू'। अभी एक कुत्ता 'टामी' भी पाल लिया है। कुत्ता रात भर चौकीदारी करता रहता है। एक दिन डाकू आये। कुत्ते ने कई डाकुओं को काट

खाया। अन्त में डाकू की गोली से शहीद हो गया—अपने मालिक के लिए।

"डाकुओं के साथ एक आदमी चादर ओढ़े खड़ा था।" सेठ जी ने कहा, "उसका चेहरा नहीं दिखता था।"

खोज बीन के बाद पुलिस ने घीसू को बन्द कर दिया था क्योंकि खोजी कुत्ते ने केवल उसे ही पकड़ा था। सेठ जी ने कहा, "नहीं घीसू ऐसा नहीं कर सकता।"

पर बाद में घीसू ने जुर्म स्वीकार कर लिया था। एक पुराना विश्वास खत्म हो गया था। सेठ के लिए नया कुत्ता, पुराने नौकर से अधिक वफादार निकला। □

खटमल और सेठ

एक खटमट टॉकीज से एक सेठ जी के घर तक आ गया। उसने सोचा चलो अच्छा हुआ वहां से यहां फायदे में रहेगा। वहां हम लोगों की संख्या बहुत थी। हिस्से में बहुत कम खून मिल पाता था। यहां तो मैं अकेला हूं, और माल ही माल है। सेठजी के घर में सभी लोग खूब मोटे हैं। यहां तो खूब मजा रहेगा।

उसने शुरूआत उनके नौकर से की। नौकर के बिस्तर में घुस गया और उसका खून पीता रहा। जब नौकर के शरीर में खून कम हो गया तो वह सेठ के बिस्तर में घुस गया। पहले दिन ही सेठ जी का खून भर पेट पिया। इस तरह खटमल भी मोटा हो गया। दो चार दिन बाद फिर सेठ जी को उसने काटा, सेठ उठ बैठा, लगा खोजने किसने काटा…और उसे मोटा ताजा खटमल दिख गया।

सेठ जी, जो लोगों का शोषण कर इतने मोटे हुए थे, भला एक खटमल से अपना खून चूसवाना कैसे सहन कर सकते थे ? झट से लपके, उसे पकड़ा व मस्ल दिया और गुर्राये, "स्साला···मेरी बराबरी करता है !" □

खिचड़ीवाद

एक देश था, जहां हर बार ईश्वर जन्म लेता था और उस देश का नाम पूरे विश्व में ऊंचा कर देता था। वहां के लोगों का ईश्वर में अटूट विश्वास था। इससे वे महान धर्मवादी हो गये थे। वह देश सभ्यता संस्कृति में विश्व का गुरु माना जाता था। धीरे-धीरे वह देश अपनी पहचान खोने लगा। ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्ति को वह खोने लगा और एक दिन वह दूसरों का गुलाम हो गया। अब वह फिर आजाद हो गया है। लेकिन उसकी आदतें अभी भी गुलामों जैसी हैं। अब वह दूसरे देशों की तरक्की देखकर उनके आदेशों पर चलने की सोचता है। लेकिन वह उनकी राह पर भी ठीक से नहीं चल पाता और न अपने ईश्वर के बताये मार्ग पर ही ठीक से चलता है। इधर वह कम्युनिस्ट विचार धारा को अपने देश में लाना चाहता है। लेकिन जहां ईश्वर का अवतार होता हो वहां कम्युनिस्ट का अवतार कैसे हो सकता है ? फिर भी वहां के प्रगतिशील लोग परिवर्तन के इच्छुक हैं। कुछ लोगों ने ईश्वर को हृदय से निकाल दिया तो वे नम्बर दो से बड़े आदमी बन गये। कुछ डकैत हो गये, तो कुछ 'नेता' हो गये। बाकी जनता केवल भजन-कीर्तन कर रही है। गांधी जी के आश्रम में 'रामधुन' हो रही हैं। गांधी के बेटे मार्क्स को पढ़ने लगे हैं ? लेकिन

अब वे न गांधीवादी ही रहे और न मार्क्सवादी ही, ईश्वरवादी भी नहीं···। दरअसल अब वे गड्डमड्ड हो गये हैं। अब ईश्वर फिर वहां रावण को भेजेंगें ताकि उसे मारने के लिए फिर जन्म ले सके। □

खून का संबंध

एक दिन बकरे ने कसाई से कहा, "हे बाप जी ! आपका और मेरा 'खून' का संबंध,है।

कसाई बोला, "बेटा खून का संबंध भी दो तरह का होता है। एक 'झटके' का दूसरा 'हलाल' का, तुझे क्या पसंद है ?

बकरा मिमयाने के पूर्व झटके से खड़ा हो गया···? □

गधा चला गया

एक कुम्हार के पास एक गधा था। गधा एक दिन सरयू नदी के किनारे चला गया। कुम्हार उसे ढूंढने निकला। सारी अयोध्या छान डाली, पर गधा उसे कहीं नहीं मिला। तब वह सरयू नदी की तरफ गया। गधा मालिक को देखकर भागने लगा। बूढ़े कुम्हार ने कहा, "बेटा, तुम सरयू जी के उस पार किसी दूसरे राज्य में मत चले जाना, अन्यथा वहां लोग तुम्हारी हालत खराब कर देंगे। वहां तुझे लाद कर

दुबला कर देंगे। यहां रामराज्य है। ऐसा सुख तुझे कहीं नहीं मिलेगा!"

गधे ने कहा, "मालिक! "रामराज्य" कहीं नहीं है! मेरा जन्म ही लादने के लिए है, फिर क्या 'रामराज्य' और क्या 'रावण-राज्य', सब बराबर हैं मेरे लिए।"

गधा नहीं माना और वह दूसरे राज्य में चला गया। वहां प्रजातन्त्र था.........। □

गधा युग

एक दिन एक घोड़े और एक गधे में विवाद हो रहा था। घोड़ा कह रहा था, "मैं आदि काल से युद्ध में आदमी के काम आता रहा हूं। मेरा महत्व तुमसे ज्यादा है।" गधा बोला, 'श्रीमान् आपका महत्व कभी रहा होगा वर्तमान युग में तो मेरा महत्व तुमसे ज्यादा हो गया है। मैं कितने भव्य भवन बना रहा हूं। ताज महल भी मैंने ही संगमरमर के पत्थरों को ढो-ढो कर बनवाया था। तुम्हारा महत्व तो सिर्फ युद्ध के समय है पर मेरा महत्व हरदम रहा है और रहेगा। अब तो लोग सवारी भी तुम पर नहीं करते, मोटर कार में करते हैं। तांगे वाले तक अब भूखे मर रहे हैं। पर मेरा मालिक कुम्हार अब ब्रह्माजी जैसा सुख भोग रहा है।

घोड़ा उसकी बात से सहमत हो चला था। चूंकि उसका अपना पेट भी खाली था और पैरों में लोहे की नाल ठुकी थी...।

गधा दार्शनिक की मुद्रा में खड़ा-खड़ा मुस्करा रहा था। □

गिरगिट उवाच

गिरगिट को रंग-बदलते देख जंगल के जानवर हैरत में पड़ गये। उसे उन्होंने चमत्कारी समझ कर नमन किया तो गिरगिट गदगद होकर बोला, "मैं ईश्वर द्वारा भेजा गया दूत हूं ! तुम्हें मुझसे जो वरदान मांगना है, मांग लो।" जंगल के सारे जानवरों ने एक स्वर से कहा, "महाराज ! हमें एक सर्व गुण सम्पन्न राजा की जरूरत है जो जंगल को मंगलमय बना दे।"

गिरगिट ने एवमअस्तू कहकर शेर को जंगल का राजा बना दिया।

जंगल की खबर से समतल के लोगों ने भी गिरगिट को कोई महान शक्ति समझ कर उससे निवेदन किया, "महाराज हम भी बहुत दीन-दरिद्र हैं अतः हमें भी कुछ ऐसा दे दीजिये कि हम उसके द्वारा अमन चैन और सुख शांति से रह सकें। हमें आज़ादी, गणतंत्र मिले। जिससे हम सब एकता से समान रूप से अपना जीवन बिता सकें, सुख, सम्पत्ति, वैभव सदैव हमारे पास रहे।"

गिरगिट ने सभी को एक-एक हाथी दे दिया जिसे लेकर सब खुशी-खुशी अपने-अपने घर आ गये।

अब हाथी आदमी से परेशान था और आदमी हाथी से। □

गिरोह

जंगल में कुछ सूअरों ने एक गिरोह बनाया। एकता से रहने की कसम सबने मिलकर खाई। अनुशासन को प्राणों से ज्यादा महत्व दिया जावेगा, यह सबने मिलकर तय किया।

"संघे शक्ति कलियुगे" ही उनका उद्देश्य था। जंगल में उनकी एकता का परचम फैल गया। शेर तक भयभीत रहने लगा उनसे।

गांव के लोग भी उनसे घबराते थे। क्योंकि जिस किसान के खेत में पहुंच जाते तो उसके रहते भी फसल चौपट कर जाते। वह उनके सामने नहीं आ पाता था। क्योंकि एक दो बहादुर किसानों ने उनको खदेड़ना चाहा पर सूअरों ने उन्हें मार गिराया। जंगल, गांव सब उनसे थरथर कांपते थे...।

शेर ने एक सूअर को अपने साथ मिला लिया कुछ प्रलोभन देकर। एक दिन वे सब एक किसान की फसल चौपट करके लौट रहे थे। वह लोभी सूअर सब को रेल की पटरी वाले मार्ग से ले गया। खुद पीछे-पीछे चल रहा था।

तभी रेल आई। उसने क्रास कर पटरी पार करने का सबको संकेत दिया...और सब कटते चले गए रेल से, वह खुद भी कट गया। उनको प्राणों से ज्यादा 'अनुशासन प्रियता' का मोह था। उनका मोह भंग आज तक नहीं हुआ...?

☐

गुनाहों का देवता

चोरी के अपराध में गरीबा को पुलिस पकड़ कर थाने ले गई, थाने में दरोगा ने पूछताछ की, 'क्यों तुम चोरी क्यों करते हो ? तुम्हारी क्या मजबूरी है ? गरीबा ने अपनी मजबूरी बताई, "साहब मेरी दो जवान बहने हैं।" दरोगा बोला, "अच्छा चलो मैं तुम्हारे घर चलकर देखता हूं, तुम्हारी मजबूरी। दरोगा गरीबा के घर गये। घर वाले धन्य हो गये। मां, बाप, बहनों ने दरोगा को ईश्वर के समान देखा। दरोगा ने उसकी बहनों को ग़ौर से देखा और गरीबा को छोड़ दिया···?

अब गरीबा ने चोरी करना छोड़ दिया है। अब वह दरोगा के संरक्षण में सही खिलाता है और बहनों को दरोगा के घर काम करने भेजता है। वे घर का सब काम करती हैं—रोटी-पानी, कपड़े धोना और दरोगा को नहलवाना भी। करीब चार-पांच महीने में ही गरीबा की गरीबी चली गई और उसकी बहनों को दरोगा ने दूधो नहाओ-पूतों फलों के आशीष से निहाल कर दिया। शादी का खर्च भी दरोगा जी ने ही दिया था। सचमुच दरोगा जी आदमी नहीं देवता हैं, सब कहते थे। केवल वे दो बहने ही उसे कृष्ण कन्हैया कहती थीं।

शादी के बाद दोनों दामाद घर जमाई बन कर आ गये ताकि दरोगा को कोई तकलीफ न हो। □

गुरुत्वाकर्षण शक्ति

औरत ने चिड़िया से कहा, "मुझे भी उड़ना सिखला दो ?" चिड़िया बोली, "तुम धरती पर रह कर उड़ नहीं सकती कभी तुम्हें कोई उड़ा ज़रूर सकता है। तुम उड़ना चाहो तो अन्तरिक्ष में चली जाओ, बस, वहां उड़ती रहना दिल खोलकर। तुम्हें पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के बाहर जाने पर ही उड़ना मयैस्सर हो सकता है ?" औरत को अपनी गुरुत्वाकर्षक शक्ति याद आ गई वह बोली, "चल जा कहीं की झूठी मैं तुझे यहीं उड़कर वतला दूंगी।" और वह चिड़िया को चिवला कर उड़ गई···।

चिड़िया उसे देखे जा रही थी और सोच रही थी, "काश मुझ में भी औरतों सी गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती ?" □

घर की याद

शहर में एक रेस्टोरेण्ट है जो लेखकों एवं बुद्धिजीवियों का खास अड्डा है। गोपा रेस्टोरेण्ट का मालिक भी साहित्यप्रेमी है। सभी का उधारी खाता उसके पास चालू है। वह साहित्यकारों पर बहुत विश्वास रखता है। बुद्धिजीवी आते और हर मुद्दे पर चर्चाएं करते। साहित्यकार प्लाट लेने आते और बहस गोष्ठी में खो जाते थे। एक बैरा कुशाग्र बुद्धि का था। पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने का उसे शोक था। साहित्य-

कारों की काफी श्रद्धा के साथ अगवानी करता था तथा सेवा भी।

एक दिन वह बैरा कुछ उदास था। सभी बुद्धिजीवियों ने और साहित्यकारों ने उससे उदासी का कारण पूछा। उसने कहा, "सर मुझे अपने घर की बहुत याद आ रही है। यहां पर मेरा मन नहीं लगता है।"

एक साहित्यकार ने कहा—अभी हमारा मन घर में नहीं लगता तभी तो हम सब यहां आते हैं और एक तू है जो इतने अच्छे माहौल में उदास है और घर को याद करता रहता है। इस जगह तो हम सबको अपार शांति मिलती है।

बैरा बोला, "पर साहब आप लोग बुद्धिजीवी हैं, साहित्यकार हैं।"

सब मन-ही-मन सोच रहे थे हम सब कुछ हो सकते हैं, पर 'आदमी' नहीं। और छोटे आदमी तो कतई नहीं हो सकते। □

चार सौ बीस

एक दिन अखबार में पढ़ा "साठ करोड़ मसखरे चुल्लू-भर-पानी में डूब कर मर गये! मैं अफसोस में पड़ गया था, खलील जिब्रान का क्या हुआ? उसने तो कहा था कि "दो आदमी भी यदि समान विचारधारा वाले मिल जायें तो पूरे संसार में कहीं नहीं समाये!" फिर ये सब चुल्लू भर पानी में कैसे डूब मरे? मसखरे खलील जिब्रान के भूत की तरह फिर दिखे और गायब हो गये। मुझे 'भूत' पर और मसखरों के भविष्य पर उसी दिन से पूर्ण विश्वास हो गया है। दूसरे

दिन वाकई सारे मसखरे वोट डाल रहे थे, चार सौ बीस चुनिंदे मसखरों को चुनने के लिये। □

चरित्र

युवा नेता दिन भर व्यस्त रहे। शाम को राहत के लिए पैग चढ़ाया और मनोरंजन के लिए पहुंच गये फूलमती के कोठे पर। फूलमती के नाच गाने ने फूल-सा हल्का और सुगन्धित कर दिया था नेता जी को। नेता का तनाव कम हो गया था। पर फूलमती का तनाव बढ़ गया था। नेता जी ने फूलमती को सौ का नोट देना चाहा तो वह बोली, "हुजूर मैं भी नहीं लेती सौ का नोट। देना है तो···पहले बाजू बंद खोलो !"

नेता बोला, "मेरी प्यारी, पहले मुझे अपने हाथ तो मजबूत करने दे। दिसम्बर में चुनाव है। वोट···तेरे मोहल्ले से मुझे ही मिलना चाहिए···समझी ?"

फूलमती बोली, "हुजूर हाथ कमजोर थे तो इधर क्यों आये, भोपाल चले जाते। मैं भीख नहीं मांगती समझे ! वोट के लिए नोट इधर नहीं कहीं और जाकर देना, मैं नोट से सब कुछ दे सकती हूं पर वोट नहीं दूंगी। तुमने हमारे लिए आज तक क्या किया है ? वेश्याओं का चरित्र तुम लोगों जैसा नहीं है जनाव।" और सौ के नोट पर थूक कर इठलाती हुई अन्दर चली गई। □

छोटी मछली—बड़ी मछली

बड़ी मछली ने एक छोटी-सी मछली से कहा, "सुनो ! तुम खूब खाया-पिया करो ताकि तुम्हारी सेहत ठीक रहे और तुम दुश्मनों से लड़ सको।" छोटी मछली ज्यादा खाने लगी तो उसे 'अपच' की बीमारी हो गई।

बड़ी मछली ने फिर उसकी पड़ोसी मछली से कहा, "सुनो, तुम्हारी पड़ोसन सेहत सुधारने के लिए ज्यादा खाने लगी है। वह मोटी हुई तो तुमसे पहले लड़ेगी। तुम भी कुछ उपाय करो।"

उसने कहा, "बड़ी बहन जब तुम इतनी बड़ी होकर किसी को नहीं खाती, फिर वह तो मेरे समान ही है तब वह मुझे क्यों खायेगी ?"

"तू मूर्ख है ! छोटी बहन वह जब खाना नहीं चाहती तो क्यों सेहत बढ़ा रही है ?" पड़ौसी मछली की चिन्ता बढ़ा रही है ?

पड़ौसी मछली की चिन्ता बढ़ी और वह भी अपने कांटे तेज़ करने लगी। बड़ी मछली ने इसी तरह सभी को लड़ा दिया और मदद भी सभी की करने लगी।

अब सभी मछलियों ने उस बड़ी मछली को, समदर्शी एवं महान् शक्ति मानकर उसे अपना नेता मानी है। □

टकसाल

"क्यों बाई तुम क्यों परेशान हो ?"

"क्या करूं भैया मेरी छाती पर दो जवान बेरोजगार बेटे मूंग दल रहे हैं। मैं इसी से परेशान हूं। दिन भर मेहनत मजदूरी करती हूं फिर भी आये दिन तंग ही रहती हूं।"

"क्यों बाई ? आजकल कोई लाटरी-वाटरी फंस गई है क्या जो इतनी चमक आ गई है ?"

'नहीं बेटा···अपनी कम्मो जवान हो गई है न, वह आजकल खूब कमा रही है रे ! कभी घर आओ भैया ?"

"अच्छा बाई तुम्हारे लड़के क्या कर रहे हैं आजकल ?"

"अरे, भैया करेंगे क्या एक खूब खाता है, दूसरा खूब गाता है। कम्मो नाचती जो है···? कमाई, अच्छी हो तो खूब खाओ और गाओ कभी खत्म नहीं होती। जब जवान बहन, लड़की या औरत बेहद खूबसूरत हो तो 'टकसाल' कहां लगती है रे ? □

टूटते तारे

चांदनी रात में, मां-बेटी आकाश को निहार रही थीं। बेटी ने कहा, "मां देखो ! वो एक 'तारा' टूट कर गिर रहा है···?"

मां ने भी देखा। सचमुच एक तारा टूटकर धरती की ओर गिर रहा था।

बच्ची ने कहा, "मां मुझे लग रहा है इस तारे ने मेरा हाथ जला दिया है। मैं सोच रही थी कि तारे मेरे हाथों में आ जायें और मैं उनसे खेलूं।"

मां बोली, "लेकिन बेटे मेरा हाथ तो नहीं जला ?"

बेटी बोली, "पर मेरा हाथ तो सचमुच जल गया है मम्मी।"

मां ने झट से बच्ची का हाथ चूम लिया। बच्ची खुश होकर बोली, "अब जलन खत्म हो गई है। पर मम्मी तुम्हारा हाथ क्यों नहीं जला ? तुम्हारा हाथ जलता तो मैं पप्पी ले लेती।"

मम्मी खुश होकर बोली, "लो बेटे मेरी पप्पी ले लो" बच्ची ने झट से पप्पी ले ली।

मां का दिल खुश हो गया था, उसके कलेजे की जलन उसे कम लग रही थी। बच्ची पूछ रही थी, "मां तुम झूठ बोल रही हो, तुम्हारा भी कुछ जल गया है ?"

मां ने हिचकियां लीं···आंसू पोंछे···फिर बोली, "बेटे ! मेरा कुछ नहीं जला।"

बच्ची रोते हुए बोली, "मम्मी मैं जानती हूं तुम्हारा क्या जला है ! ये तारा टूट कर पापा से मिलेगा।" और मां रो पड़ी।···तभी मां को जोर से हिचकियां···आने लगीं। मां का धैर्य खत्म हो चला था। तभी बच्ची बोली "देखो न मां पापा हमें याद कर रहे हैं···तभी तो हिचकियां आ रही हैं ?" मां एक बार फिर दूसरी दुनियां में पहुंच गई थी। पर बच्ची के सहज-सरल-स्वभाव ने उसे फिर खींच लिया था धरती पर। □

दाढ़ी-मूंछ

मालिक ने भेड़ों से कहा, "मुझे तुम्हारे शरीर के गरम बाल चाहियें ताकि तुम्हारे भोजन का इंतजाम कर सकूं।"

भेड़ों ने एक स्वर से कहा, "मालिक तुम अपनी दाढ़ी-मूंछ हमें दे दो और हमारे सारे बाल ले लो ?"

मालिक बोला, "लगता है. आजकल तुम भी कार्ल मॉक्र्स को पढ़ने लगी हो ? ठीक है ! चलो लाइन बनाकर मतदान केन्द्र पर फिर जो चाहो वो ले लेना···?

□

दिये तले अंधेरा

इधर कुछ छोटे बड़े दिये चिंतित हैं कि अन्धेरा हर तरफ मुंह बायें खड़ा है। वे कहां तक और कब तक लड़ेंगे अन्धेरे के खिलाफ ?

अन्धेरे ने चुटकी ली, "मेरे प्यारे दिये जरा अपने नीचे भी तो देखो कि वहां क्या है ? जब तुम्हारे नीचे ही अन्धेरा पल रहा है तब तुम क्या खाक लड़ोगे अन्धेरे के खिलाफ ?"

दिया बोला, "अरे ये तो मेरी परछाइं है, अंधेरा नहीं है !"

अंधेरा बोला, "भाई तुम्हारी परछाइं का ही तो भाई है—अंधेरा,

फिर भाई के खिलाफ यह सब क्यों ?"

दिया सोच में पड़ गया। फिर उसने अपने नीचे देखा और भभक कर बुझ गया। अंधेरा अहसास कर हंसने लगा था हवा ने उसे और भी खूंखार बना दिया था। □

दूसरी शर्त

"मेहराजी आपको नाम निकलवाना है ? तो पहले हम से मिलो। ये जो नया अफसर आया है न मीणा उसे कुछ देना पड़ेगा और हमारी फीस भी, बोलिये क्या इरादा है ?" "ठीक है सर नामनिकलवा दीजिये, जो कुछ कहेंगे दूंगी।" सहायक जी ने कहा, "हमारे रंगरूट अकाल को बस पांच-पांच सौ देना पड़ेगा और हम तो पैसा लेते नहीं, बस अपना जलवा एक रात के लिए दिखा देना।" मेहरा जी भी चालाक थीं। "सर आपको पांच सौ तो दे दूंगी···पर दूसरी शर्त पूरी नहीं कर सकती।" सहायक जी, "ठीक है सोचिये ! आपका कार्य तो कर दूंगा। आपके हुस्न का बीमार हूं।" दूसरे दिन मेहरा जी पत्र-पुष्प लेकर आ गई पर सहायक जी नहीं ले सके, चूंकि नये अफसर ने मना कर दिया था। पर सहायक ने पैंतरा बदला, "आप उनके घर जाइये शाम को, और मेरा नाम बताइये, शायद कर दें। जरा नया है, इसलिये डरता है।" मेहराजी साहब के घर पहुंच गई शाम को। सारी बातें सहायक को बता दीं। साहब भौंचक्के रह गये, "भाई मुझे तो कुछ नहीं कहा हमारे सहायक ने। तुम्हारा कार्य नहीं हो सकता, बहुत जूनियर हो।" जब मेहराजी ने रोकर गरीबी की कहानी सुनाई तो साहब पिघल गये और कहा, "ठीक है, कल आइये निकाल देंगे

पर मैं पैसा नहीं लूंगा। तुम अनुभव का प्रमाण-पत्र ले आना, आकाशवाणी से।" मेहराजी उसी दिन से साहब की ईमानदारी से प्रभावित हो गईं, पर इन्टरव्यू देने गई तो वहां सलेक्शन नहीं हुआ। चूंकि वहां भी वह "दूसरी शर्त" मंजूर नहीं कर सकीं। बाद में उसकी नियुक्ति हो गई और वह रोजगार असफर के घर मिठाई का डिब्बा देने गई। साहब ने शुभकामनायें दीं पर मेहराजी रो रही थीं। साहब समझ गये थे, शायद उसने "दूसरी शर्त" भी पूरी कर दी। □

देश का क्या होगा ?

रानी ने अपने राजा से पूछा, "ऐ राजा। अपने देश का क्या होगा ?"

राजा बोला, "रानी जी मैं क्या जानूं···आप ही बताइये···?"

रानी उदास होकर बोली, "मुझे मालूम होता तो आपसे ही क्यों पूछती ?"

राजा बोला, "प्रिये। न तुम्हें मालूम, न मुझे मालूम। फिर ऊपर वाले को क्या मालूम होगा।"

रानी बोली, "लेकिन कुछ तो करना चाहिये हमें···?"

"क्या करें···न तुम कुछ कर सकती हो और न मैं कुछ कर सकता हूं। तब ऊपर वाला क्या करेगा ?"

"लेकिन जिसका कोई नहीं होता उसका, भगवान होता है।" पर रानी जी, जिसका भगवान होता है उसका और कोई नहीं होता···?" □

दो गधे

एक दिन दो गधे घूमते-घूमते आपस में मिले । बातचीत जात-बिरादरी में जरूरी थी । कुशल क्षेम एक दूसरे ने पूछी । इसके बाद मोटे गधे से दुबले गधे ने कहा, "भाई मैं सरकारी सरकस में काम करता हूं और तुम क्या करते हो ?"

मोटा गधा बोला, "भाई जी मैं हल्कू कुम्हार के यहां काम करता हूं, पर भाई तुम तो सरकारी सरकस में काम करते हो फिर भी दुबले हो ? तुम्हें तो मुझसे ज्यादा मोटा-ताजा होना चाहिए था ।"

दुबला गधा बोला, "भाई वहां बहुत आराम है, मैं दिन भर आराम फरमाता रहता हूं ।"

मोटा गधा बोला, "तो यार तू उस सरकस को छोड़कर मेरे पास क्यों नहीं आ जाता, देख खुली हवा में मेहनत करेंगे तो तू भी मेरी तरह मोटा हो जायेगा ।"

दुबला गधा बोला, "न भाई मैं यह रिस्क नहीं ले सकता । वहां बिना काम के खूब खाने-पीने को मिलता है फिर मेहनत कौन करे ? फिर मैं सरकस का जिम्मेदार मैनेजर भी हूं और भाई मेरी चिन्ता का विषय सरकस की एक लड़की है, वह रस्सी पर चलती है, तो मुझे डर लगता है कि वह कहीं गिर कर मर न जाये ।"

मोटे गधे ने पूछा, "भाई तुझे उसकी इतनी चिन्ता क्यों है ?"

दुबला गधा बोला, "मैं उससे प्यार करता हूं यार । वह कहती है, तू भी रस्सी पर चलने लगे तो मैं तुझसे शादी कर सकती हूं ।"

मोटा गधा हंसा और बोला, "मेरे मुर्ख दोस्त तू आदमी बनना

चाहता है तो यह तेरी भूल है। तू आदमी बनकर पछताएगा। ही नहीं बल्कि रस्सी पर चलने का करतब करते-करते मर जाएगा। हम धरती पर ही चलें, भले ही गधे बनकर चलें। ये साले आदमी की जात ही खराब है, धरती पर यह नहीं चलता, रस्सी पर चलता है, आकाश में उड़ता है और फिर कुत्ते की मौत मरता है। □

दो पागलों की खोज

एक पागल कुछ खोज रहा था। दूसरा पागल भी कुछ खोजता हुआ उसके पास आ गया था, पर वे एक दूसरे से बोल बिलकुल नहीं रहे थे।

दोनों एक दूसरे की तरफ पीठ करके बैठ गये। थोड़ी देर बाद एक पागल ने दूसरे की ओर मुखातिब होकर पूछा, "क्यों बन्धु ! तुम कुछ खोये-खोये से लग रहे हो आखिर तुम खोज क्या रहे हो ?"

दूसरा पागल लापरवाही से बोला, "यार, 'अपने-सत्य' की खोज कर रहा हूं। वह आजकल बहुत घपले में है।"

वह जोरों से ठठाकर हंस दिया, तो दूसरे पागल ने पहले से पूछा, "क्यों, तुम हंसे क्यों ? वह भी इतनी बत्तमीजी से इसमें हंसने की क्या बात है···?"

पहला पागल बोला, "यार मैं भी ऐसे ही चक्कर में हूं।"

दूसरा बोला, "वो क्या···?"

पहले ने व्यंग्य से मुस्करा कर कहा, "बन्धु मैं भी 'दूसरों के सत्य' की खोज कर रहा था पर अब वो मेरे सामने बैठा है अब हमारे सत्य··· आमने सामने हैं। □

दो शेर

एक दिन एक आदमखोर शेर ने हरामखोर शेर से पूछा, "मित्र तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है ?"

हरामखोर शेर बोला, "बंधु ! मेरी अंतिम और पहली इच्छा सिर्फ···कुर्सी है ! कुर्सी···।

आदमखोर शेर इतना सुनकर चल दिया तो हरामखोर शेर चिल्लाया, "अरे भाई ! कहां चले, तुम भी तो अपनी अंतिम इच्छा मुझे बताते जाओ।"

आदमखोर शेर बोला, "यार ! मेरी अंतिम इच्छा थी कि तुझे··· पर तू कुर्सी पर बैठने के बाद···। □

दोगलों का बोझ

एक दिन सीमेंट ने ईंट से कहा, "सखि, मुझे पीठ पर चढ़ा कर तो देख, तेरी पीठ इतनी शक्त हो जायेगी कि तुझे कोई फिर नहीं तोड़ सकेगा ? और फिर तू देश के ज़्यादा काम आयेगी। तू कई भव्य-भवन भी आसानी से बना सकेगी।"

'ईंट' ने 'सीमेंट' की बात मान ली और उसे अपनी पीठ पर चढ़ा लिया। अब उसकी पीठ पर कई मंजिले भव्य भवन धड़ाधड़ बनने लगे। इधर 'ईंट' परेशान है कि मेरी पीठ कमजोर क्यों हो गई है···? जो

छत बार-बार गिरने लगी। क्या नींव कमज़ोर है ? या मेरी पीठ, या सीमेंट में खोट है...।

पर उसकी पीठ पर दोगली सीमेंट, चढ़कर बराबर हंसे जा रही है...।

पीठ पर दोगलों को बिठा कर ढोना कितनी बड़ी मूर्खता है। ईंट को अब समझ आ रहा था, पर अब वह क्या करे... उससे दोगली सीमेंट का बोझ अब सहन नहीं हो रहा...। ☐

दोगलों के साथ

इतनी मिलावटी सीमेंट के साथ एक ईंट कब तक टिकी रहती ? वह भी अपनी जगह से खिसक गई। देखते-देखते गगन चुम्बी इमारत धूल चाटने लगी।

'नींव' के पत्थर 'ईंट' को दोष दे रहे थे। ईंट बोली, "मेरे भाई दोगली सीमेंट को पीठ पर ढोकर आसमान पर चढ़ना बहुत मुश्किल काम है। तुम्हारा क्या ? तुम तो उसे लादकर जमीन के नीचे पड़े हो। ऊपर हवा के रुख से लड़ो तब जानूं कि तुम बहादुर हो।"

दोगलों के साथ ऊपर उठना कठिन है। नीचे पड़े रहना आसान है। ऊपर सिर्फ ईमानदारी ही टिक सकती है। बेईमानी ज्यादा दिन ऊपर टिक ही नहीं सकती। दोगले सीमेंट के साथ रह कर 'ईंट' भी नीचे गिर गई।

बेईमान सीमेंट ईमानदार ईंट को भी ले डूबा है। ☐

दृष्य-दृष्टान्त

एक बार नेता जी ने कहा—भाइयो मैं आपको कोई किस्सा कहानी तो सुना नहीं सकता। चूंकि मैं कोई लेखक-बेखक तो हूं नहीं फिर भी मैं आपको एक दृष्टान्त सुनाता हूं।

एक बार क्या हुआ, कि एक विरोधी नेता अड़ गये कि आपको मेरे प्रश्नों के उत्तर देने ही होंगे। मैंने कहा अच्छा भाई ! मैं लाल बुझक्कड़ तो हूं नहीं, फिर भी उत्तर देने की कोशिश करूंगा। वे बोले बताइए जनाब दुनियां की सबसे अच्छी चीज कौन-सी है ?

मैंने कहा भाषण (मेरा) ! फिर उन्होंने पूछा, "बताइये कि दुनियां की सबसे बुरी चीज कौन-सी है ? मैंने कहा भाषण (तुम्हारा) ! फिर बीच में ही कोई बोला 'इसका अर्थ कब बदल जाता है !' नेता जी चुप्प···तभी कोई मसखरी के मूड में बोला—"जब सरकार बदल जाती है ! "

बहरहाल दोनों अपने-अपने जमाने के अच्छे लघुकथाकार थे।

□

धंधा

चार बेरोजगार लड़के नौकरी के लिए सलाह मशविरा कर रहे थे, 'यार हम तो मैट्रिक तक ही पढ़े हैं। हमें सिवा चपरासी के और

कोई नौकरी मिलनी संभव नहीं है, और फिर चपरासी के पद पर हमारा सारा सम्मान खत्म हो जाएगा। फिर, वह भी पा लेना कठिन है।" एक बोला, "भैया पा भी गये तो वेतन तीन सौ, खर्चा पांच सौ, और रिटायरमेन्ट के बाद वही बीस-पच्चीस हजार मिलेगा!"

दूसरा महत्वाकांक्षी था बोला, "यार जब हमारे प्रदेश के मंत्री मैट्रिक फेल हैं तो हम क्यों नहीं बन सकते मंत्री?" तीसरा बोला, "अमां पैसा हो तो अपन तो राष्ट्रपति बनता पर यही तो दिक्कत है।" चौथे ने कहा, "मैं रास्ता बता रहा हूं। यदि उस पर चलो तो सब कुछ बन सकते हो। पहले हम डाके डालें, फिर पैसा हो जाएगा, तो चुनाव लड़ लेंगे।" सब खुशी से नाच उठे; प्रस्ताव पास कर लिया गया…एक स्वर से ! □

नकली हाथ

एक राजा ने बुद्धिजीवियों से अपील की, "मुझे फख्र है, आपकी वजह से हमारा देश विश्व में महान बना है। हमें तुम्हारे 'वोट' नहीं बस दिमाग चाहिएं और बदले में मलाई तुम्हारे खाते में लिख दी है मैंने……।

पर याद रखिये दिमाग को 'वोट' मत समझना कभी, अन्यथा 'वोट' लेकर हम 'रोटी' भी नहीं देंगे तुम्हें।" बुद्धिजीवी सहमत हो गए थे मलाई के कारण ?

फिर राजा ने मतदाताओं को सम्बोधित किया, "मुल्क के मालिकों तुम्हारे 'वोट' से ही सरकार बनती बिगड़ती है इसलिए 'वोट' बड़े सोच समझकर देना भाइयो। इस बार मैं हर आदमी को रोजी-रोटी, कपड़ा, मकान मुहैया जरूर करा दूंगा, अन्यथा पद छोड़ दूंगा।"

और जीतने के बाद कुर्सी से चिपक गये। बुद्धिजीवियों की जीभ की जगह कागज की जीभ लगी थी···और मतदाताओं के नकली हाथ हिल रहे थे हवा में। □

नकद-नारायण

एक 'नर' ने—नारायण से पूछा, "हे—नर-नारायण जी, कलियुग में 'नर' श्रेष्ठ हैं या नारायण ?"

नारायण ने मुस्कराकर कहा, "हे ! नर-पुंगत। इस युग में न 'नर' श्रेष्ठ है और न नारायण ! इस युग में सर्वश्रेष्ठ है तो सिर्फ "नकद-नारायण"···। □

नागयज्ञ

काला नाग सभी सर्पों से अकड़ कर कह रहा था, "मेरे समान विषैला कोई भी नहीं है।"

तभी कोबरा भी आ धमके। वे बोले, "श्रीमान मेरा काटा हुआ फौरन मर जाता है, देर भी नहीं लगती, फिर तुम्हारा कथन झूठ है, तुमसे ज्यादा विषैला मैं हूं।"

उतने में वहां एक नागिन आ गई। उसने कहा, "मैं तुम दोनों का दंभ चूर कर सकती हूं, मैं काट कर पलटती हूं, पलटते ही आदमी

को स्वर्ग पहुंचा देती हूं अतः मैं तुम सबसे ज्यादा विषैली हूं।

वे सब ऐसी बातें कर रहे थे कि इतने में एक सपेरा आया और उसने मंत्र पढ़कर सबको पकड़ लिया। उसने उन्हें अपनी पिटारी में बन्द कर लिया। वे सोच रहे थे…हमारा दंभ झूठा था। ये सपेरा हमसे ज्यादा विषैला है। वे तीनों सपेरे से बोले, "भैया हमें छोड़ दो। हम तुम्हें श्रेष्ठ मान लेते हैं।" सपेरे ने कहा, "नहीं तुम थोड़े दिन मेरे साथ रहो, फिर तुम्हें यथार्थ मालूम हो जाएगा। आदमी में—मैं सबसे कम विषैला हूं। कई विषैली किस्में हैं, जैसे—पढ़ी-लिखी कौम, बुद्धिजीवी, कवि, साहित्यकार और सबसे विषैला है अजगर नेता, जो काटता नहीं, निगल जाता है। उसे देख लो फिर चले जाना… आजकल वह नागयज्ञ कर रहा है। जिसमें वह सभी विषैले नागों को भस्म कर रहा है।" यह सुनकर वे तीनों ऐसे भागे कि पीछे मुड़कर भी नहीं देखा।

सपेरा उन्हें देखकर हंस रहा था "डरपोक सालें…" □

नारी के रूप

बस में ग्रामीण युवतियां चढ़ीं तो मनचले ने उन्हें घूरना और इशारे करना शुरू कर दिया। वे चुपचाप शर्माई-सी खड़ी रहीं।

थोड़ी देर बाद, एक सजीसंवरी और बस में सवार हुई। उसे देखकर भी लोगों ने हरकत की। वह मुंहफट औरत कुछ लड़कों की ओर मुखातिब होकर बोली, "तुम्हारे जैसे कई लौंडों को निकालकर नाली में फेंक दिया है मैंने। गन्दी नाली की नाजायज औलादो, दम है तो आओ मेरे पास! मैं तुम्हें पूरी लीला समझाती हूं, समझे।"

अब वे सब मुंह लटकाए खड़े थे। कुछ लोग धीरे-धीरे खुसर-फुसर करने लगे थे, "वेश्या लगती है" शरीफ औरतें कहीं ऐसी बातें करती हैं क्या ?" □

नियति

एक नदी बड़ी तेजी से दौड़ रही थी समुद्र की तरफ। एक मुनि ने पूछा, "तुम समुद्र क्यों बनना चाहती हो ? नदी ही क्यों नहीं रहना चाहती, जबकि तुमसे मिलने के लिए नाले आतुर रहते हैं। उनके प्यार को ठुकरा कर तुम खारे समुद्र को क्यों प्यार करती हो ?" नदी का संक्षिप्त उत्तर था, "मुनिजी यह मेरी नियति है।"

फिर मुनि ने समुद्र से पूछा, "तुम क्या बनना चाहते हो ?"

समुद्र ने कहा, "मैं नदी नहीं, नारी बनना चाहता हूं, क्योंकि वह मुझसे भी ज्यादा गहरी है। □

नेता स्वर्ग में

एक हिन्दुस्तानी नेता स्वर्ग में बुलाया गया। वहां भगवान् विष्णु शेष-शैया पर विराजमान् थे। उन्होंने कहा, "वत्स ! तुमने बहुत जनसेवा की है, अतः मैं तुम्हें एक दिन के लिए अपनी शेष-शैया देता हूं। जो तुम्हें करना है करो।"

नेता ने कहा, "भगवन् ! मुझे शेष-शैया नहीं चाहिए।"

विष्णु ने शेष नाग से पूछा, "तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

शेष नाग बोले, "भगवन्, इनका भार मैं सहन नहीं कर पाऊंगा। फिर इनसे डर लगता है। अतः इन्हें धरती पर ही भेज दें।

पद-यात्रा के अनुभव

मुख्य मन्त्री ने सभी सहयोगी मन्त्रियों को गांव गांव जाकर पद-यात्रा करने का आह्वान किया तो कई मन्त्री, अचानक बीमार हो गये···और जन सभाओं में बोखला गए। सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों से हाथापाई करने लगे। तभी पी० ए० साहब ने कान में जाकर कहा, "सर आप मन्त्री हैं अपनी गरिमा कम मत कीजिए।" वे पी० ए० पर चिल्लाए, "साला गरिमा की बात करता है—गरिमा-वरिमा कहां रह गई है अब, पैदल चल रहे हैं और गरिमा की बात करता है। हम केवल जनसेवक हैं, समझे। मन्त्री की ऐसी-तैसी वो क्या लगता है। हां, तो भाइयो-बहनो आपको जो भी तकलीफ हो सीधे मुझसे आकर कहो।" एक बहनजी खड़ी हुईं, "सर मेरी कुछ समस्या है।" मन्त्री जी बोले, "कहिए निडर होकर कहिए, जो भी कहना है।" बहन जी यानि शिक्षिका बोली, "सर मेरे पति भी शिक्षक हैं, पर वे अन्यत्र पदस्थ हैं। शासन के नियम के मुताबिक हम दोनों को एक जगह पदस्थ किया जाये।" मन्त्रीजी ने गौर से बहन जी की सूरत, भरा-बदन देखा और मुस्कराकर बोले, "बहन जी आपकी समस्या वाकई बहुत बड़ी है। आप मेरे बंगले पर आइए आदेश ले जाइएगा। पर हां दोनों एक जगह पहुंचकर परिवार नियोजन की ऐसी-तैसी मत कर देना।" बहन जी भी मुस्करा दी। "अच्छा तो

वचन दो—लाल-तिकोन का पालन करोगी ?" बहन जी बोलीं "कोशिश करूंगी उन्हें मनाने की।" मन्त्री जी बोले, "अच्छा ठीक है।"

कुछ दिन बाद मन्त्री जी फिर उसी गांव दौरे पर पहुंचे तो ए. डी. आई. एस. से उक्त शिक्षिका को बुलवाया। वह बच्चा लेकर चली आई। मन्त्री जी बोले, "बहन जी ये क्या किया तुमने, वादा नहीं निभाया।" शिक्षिका बोली, "सर आपका वादा तो मैंने पूरा कर दिया है, तभी तो वह तिकोना तोड़कर लाल हुआ है न। पर हुजूर मेरे पति वहीं हैं, उन्हें यहां कब तबदील करके भेज रहे हैं ?" मन्त्री जी बोले, "अब नहीं भेजूंगा उसे यहां अन्यथा तुम तो भर दोगी फूलों से।" बहन जी ने कहा, "महोदय फूल तो सभी को प्यारे होते हैं, फिर आपको डर क्यों ?" मन्त्री जी बोले, "बहन तुम नहीं जानती हो, देश की समस्या बहुत गम्भीर है। ये लाल-तिकोन से निकलकर लाल झंडी बता रहे हैं हमें। इनके खून में कुछ गलत कीटाणु घुस गये हैं। इनका भगवान् ही मालिक है। खैर, इसका नाम गुलाब नहीं लाल गुलाब रखना। ये साले जरूर खूनी-क्रान्ति लायेंगे……।" □

पशु समाज 'सभ्य' हो रहा है

पशु-पक्षियों ने भी आदमी को देखकर तरक्की करने की बात सोची। हमारा समाज भी तरक्की करे, आदमी जैसा रहे, इसके लिए उन्होंने भी एक 'संघ' बनाया। संघ का नाम रखा गया 'सभ्य समाज संघ'। उसमें सभी पशु और पक्षी शामिल हुए। संघ के पदाधिकारियों का चयन किया गया। सबने सर्वसम्मति से शेर को अध्यक्ष और हाथी को उपाध्यक्ष बना दिया। बाकी सभी को एक-एक विभाग सौंप दिया

गया। विभाग के प्रभारी को सचिव का पद दिया गया। विभागों के सचिव पद इस प्रकार बांटे गये।

सियार और लोमड़ी को गुप्तचर विभाग सौंपे गए, तोते को शिक्षा विभाग दिया गया, ताकि पढ़ाई लिखाई ढंग से हो। कुत्ते को सुरक्षा विभाग दिया गया ताकि वह घर की सुरक्षा ठीक से कर सके। मुर्गे को जन जागरण विभाग दिया गया ताकि उनमें जागृति आ सके। उल्लू को गश्त देने का कार्य दिया ताकि रात्रि में वह अंधेरे में भी देखकर तत्काल समाचार दे दे। साथ ही उसे भविष्यवाणी रेडियो स्टेशन का प्रभारी भी बनाया गया, इस प्रकार पशु समाज अब सभ्य हो रहा है जंगल में मंगल मना रहा है। उनकी व्यवस्था को देखकर कई शहर दंग हैं, अब खण्डहर भी जंगल की तरफ पिकनिक मनाने जाते रहते हैं? □

पागल ?

एक पागल दूसरे पागल से बोला, "क्यों यार हमारे देश में, नेता कितने हैं, और बुद्धिजीवी साहित्यकार कितने है तथा जनता कितनी होगी ?

दूसरा पागल बोला, "नेता सिर्फ चवन्नी, बुद्धिजीवी अठन्नी, और जनता रुपया है।"

"अच्छा, पागल कितने होंगे ?" पहले पागल ने पूछा। दूसरा पागल बोला, "पागल तो सभी हैं, अन्यथा, चवन्नी, अठन्नी को रुपये पर शासन करने का मौका कैसे मिलता…? □

पाप-पुण्य

संत-बसंत की मां मर गई थी। अभी संत बसंत क्रमशः अठारह उन्नीस साल के हैं। पिता ने दूसरी शादी कर ली। संत-बसंत को नई मां हम उम्र मिल गई।

पिता धर्मराज ने नई मां को उपदेश दिया, "इन्हें बच्चों जैसे रखना।"

मां ने बात गांठ बांध ली और बड़े लाड प्यार से उन्हें रखने लगी। कुछ ही दिनों में वे बहुत पास आ गए और पिता उम्र के साथ-साथ मां से बहुत दूर हो गए।

कुंआरे संत बसंत युवा हो गये। शादी की कामना करने लगे।

बिना बच्चे वाली मां, संत बसंत की मां बनने का झूठा अभिनय करती रही पर वह प्रेमिका जल्दी बन गई, मां नहीं बन पाई।

संत का बसंती मां से बसंत ऋतु में प्यार हो गया था।

फिर बासंती, मां कभी नहीं बन पाई। चूंकि उनके पांव में बिवायीं नहीं फटी थीं; हां हृदय जरूर फट गया था, संत बसंत के बाप से। धर्म राज को उनके प्यार की कहानी मालूम हो गई थी। उन्होंने पत्नी बासंती से कहा, "यह पाप है।"

बासंती ने कहा, "यदि तुम खुद बुढ़ापे में शादी नहीं करते और संत की शादी मानलो मुझसे ही कर देते, तब वह 'पुण्य' होता। 'पुण्य' को पाप मैंने नहीं तुमने बनाया है। □

पेट और दिमाग

एक राजा ने अपने राज्य में हर जगह स्कूल खुलवाकर सारे रिकार्ड तोड़ दिए। उसका उद्देश्य था कि मेरे राज्य का हर आदमी पढ़ा-लिखा हो ? जब वहां सब लोग पढ़-लिख गये तो वे सब अपने अधिकारों के लिए लड़ने लगे। राजा को लगा कि अब उसके राज्य की जनता कम्युनिस्ट विचार धारा की हो गई है यह क्या…?

तो मन्त्रीने कहा, "महाराज आप हंसते हैं, कहीं ये हमारा तख्ता न पलट दें ? आपको तो इसकी चिन्ता होनी चाहिए।"

राजा बोला, "अब जितने स्कूल हैं उतने ही रोजगार कार्यालय खुलवा दिये जाए ताकि वे सब वहां लाइन में खड़े होकर नाम लिखवायें और सड़क नापते रहें। नौकरी किसी को न मिल पाए इतना ध्यान रखना—समझे !" मन्त्री ने सिर हिलाते हुए हां कहा। मन्त्री जी समझ नहीं पाये। इसका भेद राजा से पूछने लगे। राजा बोला, "बेवकूफ 'दिमाग' का सम्बन्ध पेट से होता है न ? पेट खाली रहेगा तो दिमाग…?

□

प्रजातन्त्र की जान

एक दिन 'कतार' ने भीड़ और जुलूस से कहा, "भाई तुम लोग सभ्यता से क्यों नहीं रहते ? अनुशासन राष्ट्र का प्राण होता है। यह बात तुम्हें ठीक से मालूम होनी चाहिये, अपनी हर बात सभ्यता से

अनुशासन में रहकर शासन के समक्ष रखनी चाहिए।" भीड़ और जुलूस ठहाके मारकर हंसने लगे, फिर बोले, "मेरी 'भोली कतार' तुम कतार बने खड़ी रहो, और मुंह ताकती रहो। प्रजातन्त्र 'भीड़ और जुलूस' का ही नाम है, कतार का नहीं। 'कतार' हिटलर बनवाता था, जो तानाशाही का प्रतीक है। 'कतार' के पास सिर्फ कर्तव्य हैं, अधिकार नहीं। अधिकार आजकल भीड़ और जुलूस के पास रह गये हैं!"

एक दिन तीनों अपनी-अपनी मांगें लेकर शासन के पास पहुंचे, तो दंग रह गये। 'भीड़ और जुलूस' की सारी मांगें शासन ने मान लीं थीं, पर कतार खड़ी रही। और 'भीड़' 'जुलूस' बनाने की जुगाड़ में लग गई।

कतार को मानना पड़ा कि भीड़ और जुलूस ही 'प्रजातंत्र' की जान है। □

प्रशासनिक-प्रक्रिया

अतिरिक्त जिलाध्यक्ष महोदय ने नायब तहसीलदार को बुलाया और आदेश की मुद्रा में बोले, "मिस्टर सिंह एक हफ्ते के अंदर फलां क्षेत्र खाली करवाना है। सी० एम० चाहते हैं यह कार्य जल्दी से पूरा हो! समझे!"

सिंह साहब सिवा यस सर! के और कह भी क्या सकते थे आई० ए० एस० अधिकारी से। वे सोच रहे थे—अच्छा फंसाया है मुझे, इन बड़े अफसरों ने। कब्जा हटवाना कोई बच्चों का खेल है, जो एक हफ्ते के अंदर पूरा कर लो। पर ये बड़े अफसर खुद दूर रहना चाहते हैं और बन्दूक हमारे कन्धों पर रख कर चलाना चाहते हैं, अब

मैं क्या करूं···? वे सोच रहे थे जैसे बड़े अफसर बच रहे हैं, वैसे ही मुझे बचना चाहिए। अब नौकरी करना और उसे बचाकर रखना बहुत कठिन कार्य हो गया है। पहले नौकरी करना बहुत सरल था, पर अब तो तलवार की धार पर चलना जैसा है।

ठीक है, मैं भी क्यों अभिमन्यु बनूं? नायब साहब ने उस क्षेत्र के सभी दुकानदारों को नोटिस दे दिया और छुट्टी पर चले गये। जब वे छुट्टी से लौटे तो अतिरिक्त कलेक्टर साहब का डी. ओ. लेटर उन्हें मिला, जिसमें लिखा था "आपको इतना महत्वपूर्ण कार्य सौंपा था फिर भी आपने कोई कार्य नहीं करवाया। लगता है आप उस क्षेत्र के सेठों से मिले हो तथा आप खुद उस को खाली नहीं करवाना चाहते। अतः क्यों न आपकी शिकायत जिलाध्यक्ष को कर दी जाये कि ये अपने कार्य के प्रति लापरवाह हैं तथा इनकी गतिविधियां शंकास्पद हैं।"

नायब तहसीलदार सिंह का पत्र पढ़कर माथा ठनका और वे भी गुस्से में आ गए। आखिर मैं भी तो अफसर हूं छोटा हूं तो क्या, इसलिए उन्होंने उस डी. ओ. लेटर का जवाब लिखा। "महोदय, कब्जा हटाना ला एण्ड आर्डर का कार्य नहीं है, यह न्यायिक कार्य है! और आपने इस न्यायिक कार्य में व्यवधान डाला है!

मेरा निवेदन है कि इस न्यायिक कार्य को उसी प्रक्रिया से होने दें, वरना मैं कमिश्नर को आपके द्वारा सतायें जाने की सूचना दे दूंगा, साथ ही वे बातें भी लिख दूंगा जो आप मुझसे करवाने के लिए आए दिन दवाब डालते रहे हैं, मैं एक छोटा कर्मचारी हूं यह कार्य बड़े अधिकारी से करवाया जाये चूंकि इस क्षेत्र की जनता में भारी रोष है, उन्हें हटाकर बसाने की कोई सुविधा नहीं दी जा रही है, अतः इस बड़े कार्य के लिए किसी बड़े अधिकारी को यह कार्य सौंपा जाये।

नायब साहब का उत्तर देखकर अतिरिक्त कलेक्टर का पारा चढ़ गया था। पर क्या करते बात तो सही थी, उन्होंने कब्जा हटाने का

वह कार्य उप-जिलाध्यक्ष को सौंप दिया। उप-जिलाध्यक्ष ने पुलिस की सहायता से कब्जा खड़े-खड़े हटवा दिया, बड़े साहब खुश थे। मिस्टर बत्तरा तुम से बहुत खुश हैं...

कुछ दिन बाद जाने क्या हुआ...? (जो बाद में सभी की जुबान पर था) उप-जिलाध्यक्ष को शासन ने सस्पेन्ड कर दिया था। वे सोच रहे थे...मेरा बॉस तो मुझसे खुश था फिर ये कैसे हो गया...?

क्षेत्र का विधायक भी पटा था, फिर ये कैसे हो गया...? कुछ दिन बाद बड़े साहब यानी अपर-कलेक्टर का भी तबादला अन्यत्र हो गया था। जाते वक्त उन्होंने उसे बुलाया भी नहीं और न ठीक से मिले ही।

नायब तहसीलदार सिंह को भी उनका एक लिफाफा मिला था, जिसमें उनके कार्यों की प्रशंसा थी। पर मुझे तो उन्होंने कुछ ऐसा नहीं लिखा है क्यों? वे सोच रहे थे। दो माह बाद शासन से उन्हें एक लिफाफा मिला था जो एडवर्स सी. आर. का था। उसमें लिखा था मिस्टर बत्तरा औसत स्तर से कम के अधिकारी हैं। इसके ख़िलाफ़ भ्रष्टाचार की कई शिकायतें मिलती रही हैं।

अब उप-जिलाध्यक्ष मिस्टर बत्तरा...सब कुछ समझ गये थे...!

□

प्रसव पीड़ा

मज़बूत बचपन से ही अपने नाना के पास रहता था चूंकि उनके और कोई छोटे बच्चे नहीं थे तथा उस पर उनका स्नेह भी बहुत था। मां-बाप का प्यार उसे मिला ही नहीं और जब वह बड़ा होकर

अपने पिता के घर आया तो मां-बाप बहुत खुश हुए। मजबूत की शादी कर दी। अब उनमें सदैव तू-तू मैं-मैं होने लगी। एक दिन तो उसने अपने क्रोधी पिता को बहुत मारा था। बाप लंगड़ा था। सदमा लगा, मर गया। मां रोकर कह रही थी, "तू पैदा होते ही मर क्यों न गया।" और एक दिन बाद मजबूत की पत्नी भी प्रसव पीड़ा से मर गई थी। तब वह समझ गया था कि प्रसव-पीड़ा क्या होती है। □

फरार

'सुनो भाई ! इन दिनों शहर में दो पागल आये हैं, मुझे तो लगता है ये सी. आई. डी. वाले हैं ?"

"हो सकता है यार। आजकल क्राइम भी बहुत बढ़ रहे हैं ?"

"सुनो ? हमें उन पर नजर रखनी चाहिए।"

"हां यार, कहीं…।"

तभी दो पागल जो शहर में नये आये थे एक-दूसरे से पहली बार मिले, 'गुडमॉनिग भाई जान।" "गुडमॉनिंग 'फ्रेंड' ! आओ हम दोस्त बनें।"

"क्यों नहीं ? हम तो पुराने मित्र हैं।" दोनों हंसने लगे, "अच्छा, तुम किस सिलसिले में, आए हो ?"

"मुझे एक फरार डाकू के यहां होने की खबर लगी है। और तुम किस सिलसिले में यहां आये हो…?"

"बन्धु मुझे भी एक सी० आई० डी० के फरार आदमी की खबर लगी है, वह आजकल यहीं है ?

"तो मुलाकात हुई उससे…?"

"नहीं, अभी तक तो मैं खुद को ढूंढ़ रहा था, उसे बाद में ढूढूंगा। अच्छा भाई-- तुम्हें अपना शिकार मिला कि नहीं ?"

"नहीं यार अभी तक तो कोई सुराग हाथ नहीं लगा। ठीक है हम-दोनों मिलकर उन दोनों को ढूंढ़ निकालेंगे—हैं ना।

"हां यार ! एक से दो भले होते हैं।"

दूसरे दिन शहर में दो जगह डाके पड़े, चार मर्डर हुए। तभी से वे दोनों पागल गायब हैं ?

"हो सकता है वे दोनों ही इन घटनाओं के सूत्र धार रहे हों…? चलो हमसब मिलकर उन्हें खोजें ? चलो भाइयो हम सब उन्हें खोज लेंगे।"

तीसरे दिन सामूहिक हत्याएं शहर में हो गई थीं। कुछ बैंकों को भी लूटा था। शहर में कर्फ्यू लग गया था। अब कोई किसी की खोज नहीं कर रहा था।

सब अपनी-अपनी खोज कर रहे थे। पर उनके घर में होते हुए भी उन्हें लग रहा था हम फरार हैं। इन दिनों पूरा शहर फरार हैं…सेना के जवान शहर और शहर वालों को गिन-गिनकर खोज रहे थे…?

फ्री गाइडेंस

मैं स्कूल कालेजों में, व्यावसायिक मार्ग दर्शन देने जाता रहता हूं। चूंकि रोजगार अधिकारी का सही काम यही होता है। बाकी नाम या सूची भेजने का काम तो गौण है। एक दिन मैंने एक कालेज में अपनी टॉक प्राचार्य से मिलकर रखी और रोजगार के अवसर पर

बोलने लगा। एक लड़का बीच में उठकर बोला, "सर, ये भाषण तो हम रोज सुनते हैं। हमें भाषण नहीं नौकरी चाहिए···!"

मैंने कहा, "भाई नौकरी देना हमारे हाथ में नहीं है। हम तो मुख्यरूप से यही काम करते हैं। बेरोजगारों को गाइडेंस देते हैं, ताकि वे उचित प्रशिक्षण लेकर नौकरी पा सकें, नियोजन कार्यालयों का मुख्य कार्य मार्ग दर्शन देना है।"

तभी चार-पांच ने संवेत स्वर में कहा, 'सर आपके दफ्तर की भी नसबंदी हो गई है, माह में दो या तीन और बस···नो वेकेन्सी।" और हूटिंग करने लगे। मैंने कहा, "भाई विदेशों में मार्ग दर्शन की फीस ली जाती है, पर हमारे देश में 'फ्री गाइडेंस' है।" लड़के बोले, "सर, गाइडेंस तो फ्री है पर नौकरी फ्री में नहीं मिलती।" □

बच्चा

बच्चा अब घुटनों के बल चलना सीख गया था। बच्चा तोतली बोली बोलने लगा था। पिता ने बच्चे को अंगुली पकड़कर चलना सिखाना चाहा। बच्चा एक दो बार गिरा, उठा, फिर अंगुली पकड़ कर चलने लगा। बच्चा चलते-चलते दौड़ पड़ा। बच्चा जब दौड़कर पिता के पास आया तो पिता ने खुश होकर उसे गोदी में उठा लिया। बच्चा अब चलना सीख गया था। बच्चा लिखना-पढ़ना भी सीख गया था। लिख-पढ़कर नौकरी करने निकला···लेकिन बेरोजगार बना रहा···अब वह जब घर लौटकर आता है तो बाप खुश नहीं होता। बच्चा बाप के कंधों पर बैठकर नौकरी भी पा गया। बाप ने शादी भी कर दी। बच्चा ड्यूटी पर गया तो फिर नहीं लौटा ! बच्चा

अब तेज दौड़ रहा है···बाप खुश है बच्चा खूब दौड़ता है।···बाप दु:खी है—बच्चा आता तो पहले की तरह गोद में उठाकर लाड़ करता ···पर बच्चा अब खुद बाप बन गया था। वह भी अपने बच्चे को चलना सिखाएगा···पर बूढ़े बाप की लाठी कौन पकड़ेगा ? □

बपौती

"क्यों भाई मिरचूमल मैट्रिक पास करने के बाद क्या करोगे ?" रमेश ने अपने सहपाठी मित्र से पूछा। मिरचूमल बोला, "क्या करूंगा अरे भाई सिंधी का लड़का क्या करेगा तुम ये भी नहीं जानते ! बंधु मैं तो दुकानदारी करूंगा यार। पर रमेश तू तो भाई आगे पढ़ेगा ही और तेरा बाप कलेक्टर है, तो तू भी कलेक्टर ही बनेगा यार। पर भाई मेरा बाप दुकानदार जो है, कहता है···चांद पर भी आदमी जब राकेट से पहुंचा तो उसने देखा कि वहां भी कोई सिंधी—'लैय्या करारी' बेच रहा था।" रमेश खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला, "यार ! तभी तो ये व्यवसायी लोगों ने अपने श्रम से या मिलावट से आज मार्केट को केप्चर कर रखा है। लय्या करारी बेचते-बेचते आज वे लोग नगर सेठ हैं पर यहां का किसान और अन्य आदमी वैसे ही है, जैसे छत्तीस साल पहले थे।" "पर भाई, मेहनत तो वे करते ही हैं। यहां तक कि उनकी औरतें भी दिन-भर गठ्ठों कपड़े धोती हैं, घर-गृहस्थी का सारा कार्य खुद करती हैं, तब तरक्की आर्थिक क्यों न होगी ?"

"पर यार किसान का लड़का भी पढ़-लिखकर किसानी नहीं कर पाता है ? यह कैसी विडम्बना है। वो शेर सिंह को ही देख न, उसने

बी० एस० सी० अग्रीकल्चर करके भी घर की किसानी ठीक से नहीं कर पा रहा है। सदैव कहता है यार मेरे फादर ने मुझे भी बैल बना दिया है। जब जमींदारी थी तो कोई दिक्कत नहीं रही सदैव ऐश करते रहे। पर भाई अब तो हालत खराब है, कहता है तेरा फादर कलेक्टर है मुझे भी कहीं अच्छी सी नौकरी लगा दे। मैं बैल और ट्रेक्टर के चक्कर छोड़ ऑफिस की जिंदगी जीना चाहता हूं। यार हम खुली हवा के लिए तरसते रहते हैं, और शेर सिंह ऑफिस की हवा के लिए तरस रहा है ? बता भाई, ये क्या विडम्बना है। मैं इस हाल में खुश नहीं हूं और वह उस हाल में खुश नहीं है। आज जो जहां है, वह दुःखी है इस दुख का कारण क्या है भाई ?" मिरचूमल बोला, "अरे साईं, हम तो अपने हाल पर संतुष्ट हैं ! इसलिए मैंने ज्यादा पढ़ना ठीक नहीं समझा, यार ! ज्यादा पढ़ने से सुपीरियर्टि काम्पलेक्स से पीड़ित हो जाते हैं– लोग, यही दुख का कारण है। अब भाई मिरचूमल का बाप भी दुकानदार था मेरे बाप का बाप भी सिंध में दुकानदार था, तब मुझमें यह सुपीरियर्टी-काम्लेक्स क्या खाक रहेगा। □

बहस जारी है !

दफ्तर के बाबू चपरासी एक नाजुक मुद्दे पर बड़ी गंभीरता से चर्चा कर रहे थे, "यार नये साहब अभी-अभी आये हैं और मकान कैसे बनवा रहे हैं ? क्या इतना पैसा इन्होंने यहां कमा लिया है ? और कमा लिया है तो हमें इसकी जानकारी कैसे नहीं मिली ?" एक-दो चतुर लोग बोले, "यार तुम तो बेवकूफ हो, यहां कहां, कमा कर लाये हैं, अब इस बात से सब सहमत हो गये थे।"

कुछ दिन बाद फिर दूसरी खबर जो चौकीदार ने दफ्तर को दी "साहब स्कूटर भी खरीद लाये हैं।" अब मामला गंभीर हो गया था कि इतना तो वहां से ला नहीं सकते जरूर यहां भी कुछ मामला तय हुआ है। कुछ लोग इस बात से सहमत थे, पर जो लोग उस दिन साहब का बचाव कर रहे थे अब लोग उन पर अविश्वास करने लगे थे कि जरूर साले साहब से मिले हैं, इन्हें भी उनसे कुछ मिला होगा तभी तो साहब के चमचे बने हुए हैं। अब उनका सामूहिक उपहास, बहिष्कार हो गया था, बात छोटे साहब के कानों तक पहुंची—कि बड़े साहब तो अफरा-तफरी कर रहे हैं। छोटे साहब ने उपदेश की मुद्रा में कहा, "भाइयों तुम बड़े साहब पर तो चर्चा कर रहे हो पर यहां के मंत्री की नई कोठी देख रहे हो कितनी भव्य और ऊंची बन रही है, क्या वह हमें मुंह नहीं चिढ़ा रही है ?"

छोटे साहब की बात सुनकर दफ्तर का सारा स्टाफ दार्शनिक की मुद्रा अख्तियार कर चुका था सभी कह रहे थे, "हां साहब सच ही कह रहे हो। 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' फिर बड़ी मछली छोटी मछली को ही खा रही है। देश का भगवान ही मालिक है ?" तभी बड़े साहब भी वहां आ धमके। उन्होंने कहा, "दोस्तों, इस देश का मालिक भगवान नहीं है बल्कि हम सब हैं, हमें अन्याय का मुकाबला मिल-जुलकर करना है। आदि···आदि···" अब लोगों के चेहरे बदलने लगे थे··· लेकिन दूसरे दिन फिर लंच में वही खुसर-फुसर हो रही थी कि साले कितने बदमाश हैं ? इस दफ्तर में एक सफेदपोश गिरोह काम कर रहा है जो सारे दफ्तर को बेवकूफ बना रहा है। छोटे साहब फिर टपक पड़े थे ऐन मौके पर, वे बोले, "दोस्तों यह गिरोह न केवल दफ्तर को बल्कि पूरे देश पर अपना शिकंजा जमा रहा है।" लोग फिर उलझ गए थे···कि इस गिरोह में आखिर है कौन-कौन ? अब किसी को किसी पर विश्वास नहीं था। कौन किसका आदमी है ?

अब हर आदमी खुद से भी गड़बड़ा गया था लेकिन दफ्तर में हर

रोज लंच में यही चर्चा होती है, जब से दफ्तर खुला है तभी से रोज दफ्तर चर्चा का विषय बना है, अब न दफ्तर बंद होगा और न चर्चा बंद होगी, लोग आते हैं पर चर्चा वही करते हैं क्या यह चेन-सिस्टम कभी टूटेगा भी या नहीं ? इसका जवाब दफ्तर को नहीं बाहर वालों को देना है। □

बीमारी

एक सेठजी मीठा खाने के बहुत शौकीन थे। प्रतिदिन मीठा खाते रहते थे। मीठा खा-खा कर उन्हें बीमारी हो गई थी। कई डाक्टरों से दवाई ली किन्तु रोग बढ़ता ही गया।

एक दिन उन्हें एक व्यक्ति मिला। उसने कहा सेठजी मैं तुम्हारी बीमारी बिना पैसे की दवाई से खत्म कर दूंगा। उसने एक शीशी कड़वी दवाई दी, एक-एक चम्मच रोज पीने के लिए। परहेज में मीठा खाना बंद करो। कुछ ही दिनों में सेठ ठीक हो गया। सेठजी ने खुश होकर उसे सौ रुपये देने चाहे, पर वह बोला भाई फ्री की दवाई के पैसे क्यों लूं ! मैंने जो कड़वी दवाई दी थी वह तो नीम की पत्ती का रस था, सेठजी तुम भी नीम का झाड घर में लगा लो। और रोज-दो पत्ता खाओ, कभी बीमार नहीं होओगे।

दरअसल कीड़े मिठास में ही पड़ते हैं, कड़वी चीजों में नहीं। यही मीठा खाने की नियति मेरे देश की है; इसीलिए सारा देश बीमार है। □

बूढ़ा-पेड़

धरती ने बूढ़े पेड़ से कहा, "अरे बाबा ! अब बुढ़ापे में क्यों हाय तोबा करते हो···? अब तो तुम्हारा आराम करने का समय है, लेकिन तुम तो दिनभर लगे रहते हो ? अब बुढ़ापे में तुम क्या कर सकते हो।" बूढ़ा पेड़ बोला, "मैं अपना कर्म करना कैसे छोड़ दूं। फिर तू भी तो दिन भर घूमती रहती हो, फिर भला मैं क्यों बैठा रहूं—निठल्ला बन कर।" धरती बोली, "अच्छा बाबा तुम्हारी दिनचर्या क्य है ?" बूढ़ा पेड़ बोला, "मैं चार बजे से उठ जाता हूं और जैसे ही सूरज निकलता है मैं सूर्य का प्रकाश ग्रहण करने लगता हूं फिर रात को भी ठीक से सो नहीं पाता। सारी कार्बनडाईअक्साइड को अमृत के समान पीता रहता हूं और आदमी को बदले में ऑक्सीजन देता हूं। पर देवी, ये आदमी फिर भी मेरे पीछे पड़ा रहता है। कई लोग मुझे देखकर कहते हैं बूढ़ा चूल्हे में अच्छा जलेगा काट लो।"

धरती ने पूछा, "फिर तुम्हें उनका ये आचरण कैसा लगता है ?"

बूढ़ा पेड़ हंसा और बोला, "मैं पेड़ हूं और वे इन्सान हैं, वे और क्या सोचेंगे···। मेरी तो यही तमन्ना है कि मैं कट मर कर भी आदमी के काम आऊं पर वे किसी के काम नहीं आ रहे हैं इसका मुझे दुःख है ··।

धरती और तेज रफ्तार से घूमने लगी थी। □

बेरोजगार

आई टी आई के छात्र भूख हड़ताल पर बैठ गए थे, जनरल मैनेजर के दफ्तर के सामने। जनरल मैनेजर ने कलेक्टर को टेलीफोन लगाया, "सर ला एंड आर्डर की व्यवस्था करियेगा।" कलेक्टर ने कहा, "हां हां हम पूरा सहयोग देंगे आप चिन्ता न करें। जी० एम० ने खुद जाकर लड़कों को समझाया, "बेटों—तुम मेरे लड़के हो, नौकरी के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता रोजगार दफ्तर इसलिए शासन ने बनाया है। तुम सब वहां जाकर अधिकारी से मिलो।" वे सब उठकर रोजगार दफ्तर के समक्ष आ बैठे और वहां, शुरू कर दी भूख हड़ताल। रोजगार अधिकारी ने उन्हें समझाया, "भाइयो मैं तो नाम भेजता हूं जब नौकरी आती है, तब। यहां तो भर्तियां पूर्णत: बन्द हैं। मैं तुम्हें कहां भेजूं ?" लड़कों ने पूछा, "सर फिर हम कहां जाएं।" तुम्हें मंत्रियों के पास जाना चाहिए। मंत्रियों ने भी वही आश्वासन दे दिया। हम दिल्ली जाकर तुम्हारे लिए नई योजना बनवाकर लाते हैं। नई योजना पांच साल तक नहीं आई, तो लड़कों ने मंत्रियों का घिराव शुरू कर दिया और अधिकारियों की पिटाई शुरू कर दी…

अब वे नक्सलवादी कहलाने लगे हैं, बेरोजगार नहीं…!"

□

बैल और आदमी

उनके पास सौ बैल थे। उसके पास सिर्फ दो बैल थे। वे पुराने-मालगुजार थे। वह पुराना गरीब था।

गांव में अब पटेल का भी चुनाव होने लगा है। पहले ऐसा नहीं होता था। अंग्रेजों के ज़माने में वे जिस पर खुश हो जाएं उसे मालगुजार या जागीरदार बना देते थे। पर आजादी के बाद व्यवस्था बदली, हर पद के लिए चुनाव होने लगे।

खैर-दीवान गांव अब मालगुजारी गांव नहीं है, फिर भी नाम आज भी मालगुजारी। पटेल का चुनाव होना था सो हुआ। दो बैलवाला जीत गया। सौ बैल वाला हार गया। उनके पास सौ बैल थे। पर आदमी सौ नहीं थे। जीतने वाले के पास बैल दो ही थे पर आदमी सौ थे, सो जीत गया।

अब वे दुःखी हैं—कि हमारे सौ बैलों का क्या होगा···? इतनी सारी जमीन का क्या होगा :

और गांववालों ने देखा कि दीवान जी की सारी जमीन छोटे घास में चली गई।

"क्या इतनी जमीन उन्होंने खरीदी थी ?" दो बैल वाला बोला, "खरीदी होती तो जाती क्यों। गरीबों से छुड़ा ली थी। रहन रख-रखकर सो चली गई। पर अब सरकारी छोटे घास की जमीन पर जायें किसी के बैल चरने ? नये पटेल के दो बैल शान से चर रहे थे वहां, फिर क्या था—सबने वहीं कर दिये अपने सारे बैल ढोर।

बैल आदमी की मुद्रा अख्तियार कर चुके थे, आदमी—बैल की मुद्रा में आ गए थे। □

बैल नेता नहीं है

गांव में एक तेली था। वह अपना खानदानी धन्धा यानी कोल्हू चलाकर तेल पेरता था। वह बैल को कोल्हू में जोतकर, मस्त घर के सामने बैठकर बीड़ी पीता था। एक दिन एक नेताजी पद यात्रा के दौरान वहीं से गुजरे, सबका हालचाल पूछते हुए। नेता ने पूछा, "क्या कर रहे हो साहू जी ?" "मालिक कोल्हू का वही पुस्तैनी धन्धा कर रहा हूं। भीतर कोल्हू चल रहा है।" नेता जी बोले, "तुम इधर बाहर बैठे हो और भीतर कोल्हू चल रहा है, यह क्या ? यदि वह बैल चलते-चलते रुक जायें तो फिर ?"

तेली बोला, "मालिक उसके गले में घन्टी बंधी है, यह बजती रहती है, बन्द होने पर मैं समझ जाता हूं और जाकर हांक आता हूं।" नेता जी बोले, "पर यदि वह न चले और सिर हिलाता रहे तो ?" वह बोला मालिक। यह काम वह नहीं कर सकता, क्योंकि कई नेता ऐसा कर रहे हैं। वह बैल है साहब, नेता नहीं है। □

भगवान की माया

एक दिन एक आदमी थाने रपट लिखवाने गया कि मेरी औरत को मंदिर से भगवान कहीं भगाकर ले गया। थानेदार का पारा गर्म हुआ, "स्साले, झूठ बोलता है! यहां हमारे थाने के क्षेत्र में हमारे

सिवा दूसरा कौन भगवान आयेगा। जरूर स्साला···मंदिर का पुजारी इसमें इनवाल्व होगा !" पुजारी को बुलाया गया।

थानेदार ने गरज कर पूछा, "क्यों मादर···! तेरा भगवान इसकी औरत भगा ले गया, और तू मजे मे भजन गा रहा है। इसे अन्दर कर दो मुंशी जी !"

पुजारी ने कहा, "हुजूर मेरे भगवान तो आप ही हैं ! मुझ पर कृपा करो महाराज !" थानेदार बोला, "ठीक है तुम जा सकते हो। पूजा-पाठ ठीक से किया करो।" फिर वे उस आदमी से बोले, "तुम क्या मुंह देख रहे हो जी जाओ उसे ढूंढो। बीवी खूबसूरत रखोगे शिकायत मुझसे करोगे तो यही होगा ! चल जा, कल तक बरामद कर लेंगे। □

भगवान के सपने

भगवान आदमी के सपने देखने में मशगूल था तभी किसी ने उनकी तंद्रा भंग की। वे चौंककर इधर-उधर देखने लगे, तो आदमी हाथ जोड़ कर सामने खड़ा था। ईश्वर बहुत खुश हुए, "वत्स तुम्हारी बहुत बड़ी उम्र है मैं तो तुम्हारे ही सपने देख कर खुश हो रहा था, और तुम वाकई साक्षात् रूप में मेरे सामने खड़े हो। वत्स आसन ग्रहण करो, और मुझे मृत्युलोक के कुशल समाचार सुनाओ। तुम कहां से पधार रहे हो ?"

'आदमी ने हाथ जोड़कर कहा, "भगवान ! मैं उस भूमि से आया हूं, जहां आपने कई बार जन्म लिया है, याने भारत भूमि से।"

भगवान यह सुनकर गद्‌गद हो गए और उन्होंने आदमी को गले लगा लिया। फिर बड़े प्यार से पूछने लगे, "वत्स, मेरी व्रज भूमि, मथुरा, वृन्दावन, अयोध्या नगरी के लोग कैसे हैं? गंगा—यमुना कैसीं हैं?" आदमी बोला. "भगवान, गंगा-यमुना में प्रदूषण बढ़ गया है, इसलिए ये बहुत दु:खी हैं। मथुरा वृन्दावन में पंडों ने भक्तों को तंग कर रखा है, अयोध्या की खुदाई चल रही है वैसे पूरा भारत दु:खी है भगवन्।"

ईश्वर बोले, "वत्स, दु:ख का कारण क्या है?" आदमी बोला, "भगवन् आजकल वे सब देवताओं के सपने देखते हैं, फिर भी दु:खी हैं; वे जागरुक इतने हो गए हैं कि रात में भी नींद नहीं आती है। वह नींद की गोली खा कर ही सो पाते हैं। अत: हे प्रभु! आप फिर से वहां जन्म लेकर उन्हें सुखी करें।" ईश्वर बोले, "वत्स' मैं वहां जाकर उन्हें आदमी के सपने ही दे सकता हूं! पर जब वे खुद आदमी होकर देवताओं के सपने देखने लगे हैं, तब मेरा वहां जाना निरर्थक ही है। फिर वत्स, जब तक मुझे आदमी के सपने आते रहेंगे, मैं वहां नहीं जा सकता।"

आदमी लौटकर मृत्युलोक पहुँचा तो उसमें अद्‌भुत चमक थी। उसमें अद्‌भुत चमक प्रतिभा देख कर लोगों ने उसे कुर्सी पर बिठा दिया। बैठते ही आदमी कुर्सिया गया…? और वह बोला, "दोस्तो, मुझे भगवान के सपने आने लगे हैं। लोग चमत्कृत थे, आकर्षित थे सो उन्हें उस कुर्सियाए आदमी के सपने आने लगे…? □

भाग्य और चरित्र

नारद जी ने ईश्वर से पूछा, "हे महाप्रभु, आप तो अन्तर्यामी हैं पर ऐसी कौन-सी चीजें हैं जिसे आप भी नहीं जानते ? कृपा कर मुझे लोकहित में अवश्य बताइए !"

ईश्वर मुस्करा कर बोले, "हे ऋषिवर ! मैं दो चीजें आज तक नहीं जान पाया हूं।"

नारद ने पूछा, "वे क्या हैं महाप्रभु ?"

ईश्वर ने कहा, "ये वहीं चीजें हैं जिन्हें आदमी भी नहीं जानता ? पहली चीज़ है औरत का चरित्र, और दूसरा आदमी का भाग्य।" □

भारत सिंह

भारतसिंह गांव के पटेल का एकलौता बेटा है। गरीब दास उनके नौकर का आठवां बेटा है, और फकीर दास उनके मेहतर का नवां बेटा है। तीनों गांव के प्राथमिक स्कूल में साथ पढ़ते थे। गरीब दास चौथी पढ़कर घर बैठ गया और ग्राम पटेल के यहां चरवाहा हो गया। बड़ा हुआ तो एक क्विंटल अनाज पर हल बखर की हलवाही पा गया था।

पटेल और मेहतर के लड़के शहर पढ़ने चले गये थे। मेहतर

गपुआ का लड़का पढ़ने में ठीक था और वजीफे ने उसे आगे बढ़ा दिया पर ग्राम पटेल का लड़का शेरसिंह पढ़ने में कमजोर था फिर भी वह पढ़ रहा था। दोनों ने एक साथ मैट्रिक की फिर बी० ए० पास की। फकीरदास और तेज होता गया और भारतसिंह गांधी डिवीजन पर ही अटका रहा। फकीरदास प्रतियोगी परीक्षा में बैठा तो रिजर्वेशन ने उसे डिप्टी-कलेक्टर के लिये सिलेक्ट करवा दिया, पर भारतसिंह उसमें सफल ही नहीं हो पाया। इससे ग्राम पटेल बेहद आग बबूला हो गये थे। उन्होंने उस मेहतर को ग्राम से निकाल दिया था। गपुआ मेहतर कहता रहा, "माई-बाप मैंने आपका अन्न खाया है मैं यहीं जीना-मरना चाहता हूं।" पर पटेल कहां मानने वाले थे कि मेहतर का लड़का अफसर बन जाये और वह ऊंची नाक करके गांव में रहे, यह पटेल साहब की शान के खिलाफ था।

गपुआ गांव का मेहतर था, उसे शहर में बेटे के पास रहना रास नहीं आ रहा था।

इधर पटेल का लड़का बेरोजगार घूम रहा था। उसका मन गांव में लगता नहीं था। फिर भी उसे पैसे लेने गांव अपने घर आना ही पड़ता था। उसका बचपन का मित्र गरीब दास उसका नौकर था। गरीब दास कहता, "भैया तुम कब हो रहे हो कलेक्टर।" रमेश कहता बस आर्डर आने ही वाला है। पर इस तरह कहते-कहते जब चार-पांच वर्ष हो गये तो गरीब निराश हो चला था। वह अपने मित्र मालिक को बड़ा अफसर बना देखना चाहता था, पर उसकी यह अभिलाषा पूरी नहीं हो रही थी।

एक दिन गरीब दास बोला, "रमेश भैया सुनत हैं कि फकीर दास हमारे जिले के कलेक्टर बनकर आ गया है! अरे भैय्या चलें उससे मिल कर पूछ लेते हैं कि तुम्हारी आर्डर जल्दी निकेलवा दें। पर रमेश बोला, "अरे तू बख्खर ही रहा···मैं तो उससे भी बड़ा

अफसर बनूंगा तब वह क्या करवा सकता है ? उसके हाथ में नहीं है यह काम। कुछ दिन बाद फकीर दास उर्फ एफ० दास, आई० ए० एस० जिला दण्डाधिकारी का दौरा उसी गांव में था, सो सारे अधीनस्थ कर्मचारी बंदोबस्त में लगे थे। फकीरा जब गांव आया तो पटेल साहब ने उसे फूल मालाओं से लाद दिया था और अपने गले लगा कर बोले थे—बेटा ! तूने तो हमारा नाम ऊंचा कर दिया है, गांव वालों को तुझ पर गर्व है !

और फकीरा ने सब बड़े-बूढ़ों के पांव छुये थे। मित्रों से गले लगा कर मिला था। रमेश उसके गले लग कर बहुत रोया था। फकीर दास ने उसे ढाढस दिया था कि मैं तुम्हारे लिए कुछ करूंगा तुम चिन्ता मत करो। बाद में फकीर दास ने जो सी० एम० की गुड बुक में थे रमेश को उस क्षेत्र के विधायक का टिकिट दिलवा दिया था।

सत्ता-पार्टी ने जोर लगाया और रमेश विधायक का चुनाव जीत गया था। फकीर दास ने सी० एम० से उसकी तारीफ की तो सी० एम० ने उसे मंत्रिमंडल में भी ले लिया था। अब रमेश जी मंत्री हो गये थे। पर वह सारा श्रेय रमेश अपने मित्र—फकीरा को ही देता था कि मित्र हो तो ऐसा हो। रमेश पर मंत्री पद का नशा धीरे-धीरे बढ़ने लगा था। एक दिन फकीरा खुश होकर उससे लिपट गया तो रमेश को उसमें फिर वही मेहतर की बू आ गई थी। दूसरे दिन रमेश जी ने शासन से उसका ट्रांसफर आर्डर निकलवा दिया था। फकीरा को क्या मालूम था कि उसका ही मित्र उसे हटवा रहा है। उसने कहा, "तुम्हारे होते हुए मेरा ट्रांसफर हो रहा है ?"

रमेश जी ने कहा, "नहीं यार यह तो मुख्यमंत्री का विभाग है, मैं क्या कर सकता हूं ?" फकीर दास मुख्य मंत्री से मिले तो वे उखड़े उखड़े थे। और कह रहे थे, "मिस्टर एफ० दास तुम सरकारी अफसर हो तुम्हें नेतागिरी से दूर रहना चाहिए, वरन...।" फकीरा कुछ समझ

ही नहीं पा रहा था कि यह सब कुछ क्या हो रहा है।

लेकिन उसे सारी बातें सचिवालय के मित्रों ने बता दी थीं। अब वह सोच रहा था कि हमारे संस्कारों से हमारी आदिम बू नहीं जा सकती। ये जाति धर्म का झगड़ा कब तक रहेगा हमारे देश में ?" ...

□

भूख

गपुण को गरीबी ने बूढ़ा कर दिया था। छोटे-छोटे पेट भी तो वह बमुश्किल भर पाता था। दिन भर सब मैला फैंकते थे और महीने के आखिर में उसे सब पांच-पांच रुपये ही तो देते थे। जबकि खाने को नहीं रहता तो बाजा उठा घर-घर बजा देता तो उस दिन का गुजारा चल ही जाता था, किन्तु एक दिन अचानक उसकी बड़ी लड़की भागवती किसी के साथ भाग गई थी। चूंकि वह जवान थी, और साथ ही बहुत खूबसूरत भी और आखिर कब तक वह अपनी जवानी की भूख से तड़पती रहती बेचारी ने भूख बुझा ही ली।

कुछ दिन बाद उसकी औरत जो अधेड़ थी, ने भी गपुण का साथ छोड़ दिया। वह भी अपने एक रिश्तेदार के साथ भाग गई थी यह सब पेट के खातिर ही हुआ था। अब उसके पास केवल दो छोटे-छोटे बच्चे रह गये थे। 'भूख' जवानी सहन नहीं कर सकती इसे तो बुढ़ापा या बचपना ही स्वीकार कर सकता है। शायद इसीलिए अधिकांश वृद्ध और बच्चे ही भिक्षावृत्ति करते हैं।

जवान भिखारी को कोई भिक्षा भी तो नहीं देता। □

मंत्री पद की गरिमा

जेल मंत्री जेल के निरीक्षण पर थे। सभी जेल का मुआइना कर रहे थे। जेलियों से उनकी तकलीफें सुन रहे थे। सभी कैदियों ने शिकायत की, "सर यहां, भोजन ठीक से नहीं दिया जाता है।" मंत्री जी ने कहा, "भाई, यह घर तो है नहीं, जेल आखिर जेल ही है।" फिर भी उन्होंने जेलर से कहा, "देखो इन्हें भोजन बढ़िया मिलना चाहिए। जेलर ने कहा, "सर मैंने सदा ही जेलियों को अच्छा खाना खिलवाया है, पर आज तक मुझे प्रमोशन नहीं मिली, पर जिन्होंने घटिया खाना खिलवाया था, वे प्रमोशन पा गये।" मंत्री जी हंस कर बोले, "भैया यह मुकद्दर की बात है। कभी मैं भी इसका ठेका लिया करता था और घटिया खाना खिलाया करता था, पर अब मुझे मंत्री की गरिमा भी तो रखनी है, जनता का प्रतिनिधि जो हूं! □

मीठी कहानी

"मां, कहानी सुनाओ।"

"बेटे, राजा की कहानी सुनोगी! चलो आज शेर राजा की कहानी सुनाती हूं।"

नहीं मां शेल लाजा की कहानी मुझे नहीं सुननी।"

"तो कौन-सी कहानी सुनोगे बेटा ?"

"मां शेल लाजा की कहानी से मुझे डल लगता है। रात को बुरे सपने आते हैं··· फिर चाहे मैं डल जाऊं।"

मां ने कहा, "बेटे आज तुझे अच्छे राजा की कहानी सुनाऊंगी।"

"नहीं मां लाजा सब एक से होते हैं। चाहे शेल लाजा हों दूसले कोई लाजा। मां तुम तो बस पलियों की कहानी सुनाओ। जिसे कोई डाकू पकड़ कर न ले जाये। सुनाओगी न मां ?"

हां बेटे, "आज तुम्हें मधुर बड़ी मीठी कहानी सुनाऊंगी !"

"मां वह शक्कल जैसी मीठी होगी न ?"

मां की आकृति बदल जाती है और वह धीरे-से हां कह देती है। □

यूनियन

एक बार सारे कुओं ने मिलकर एक यूनियन बनाई।

उस यूनियन में शामिल होने के लिए कुछ नदियों और तालाबों ने आवेदन किया। कुओं की यूनियन ने विचार विमर्श किया कि अपनी यूनियन में नदियों और तालाबों को शामिल किया जाए कि नहीं।

खूब सोच विचार के बाद निर्णय लिया गया कि कुओं की यूनियन में सिर्फ तालाबों को शामिल किया जाये नदियों को नहीं। चूंकि नदियों को शामिल करने से उनका महत्व कुओं और तालाबों से बढ़ जावेगा।

कुछ दिन बाद सारी नदियां समुद्र से जाकर मिल गईं। उनकी यूनियन का नेता समुद्र था। इस बार समुद्र ने वर्षा नहीं की तो सारे कुंये और तालाब सूख गये। नदियां भी सूख रही थी, और समुद्र हंस रहा था। □

रिश्वत की जड़ कहां

एक दिन कालेज के कुछ छात्र नेता मेरे पास शिकायत लेकर आये, "सर आपके दफ्तर का भृत्य नाम लिखवाने का चाय-नश्ता मांग रहा था एक ग्रामीण से। "सर" यह अत्याचार हम नहीं बर्दाश्त करेंगे। हम सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों को भी ठीक कर देंगे।" मैंने कहा, "साथियों वाकई आप देश के जागरूक युवा हो जो रिश्वत को नीचे से दूर करने का प्रयत्न कर रहे हो। मैं आपके विवेक और हौसले की मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूं। मैं इस भृत्य को अभी नौकरी से निकलवा देता हूं ताकि उसके एक दर्जन बच्चे भूखे मरें, पर भाई मेरा एक निवेदन है, कि तुमने जड़ नहीं डाल और पत्ते पकड़े हैं। "रिश्वत" की जड़े दरअसल नीचे से नहीं ऊपर से है। और ऊपर तुम पहुंच नहीं सकते, इसलिए तुम्हारे नेता तुम्हें इसकी जड़ें नीचे से बताते हैं, वे तुमसे कहते हैं—पत्थर चलाओ, तुम पत्थर चला देते हो, लाठी चार्ज में वे नहीं तुम पिटते हो। बस जला दी और तुम बेबस हो जाते हो। दरअसल तुम्हें नीर-क्षीर के विवेक का ज्ञान नहीं है। जब तुम उसे समझ जाओगे तब तुम रिश्वत को खत्म कर दोगे, पर रिश्वत का सही पता दरअसल तुम्हें नेता बताते ही नहीं ?" □

रोजगार समाचार

शिक्षित बेरोजगार संघ समारोह में रोजगार मंत्री का भाषण था। "देश के मालिकों। देश के भावी कर्णधारों। तुम्हें नौकरी के पीछे नहीं दौड़ना चाहिये बल्कि नौकरी तुम्हें ढूंढे ऐसा कुछ कर के दिखा दो तो यह देश तुम पर नाज करेगा और अपना-अपना धंधा शुरू कर दो। विभिन्न प्रशिक्षण ले लो फिर देखो मंजिल तुम्हारे चरण चूमेंगी।" मंत्री जी के जोशीले भाषण से वे पसीना-पसीना हो गये।

दूसरे दिन अखबार में एक रोजगार सूचना छपी थी "सख्त जरूरत है, शिक्षित बेरोजगार ग्रेजुएट की लेकिन शर्त यह है कि वे बेरोजगार हों। अविवाहित हों, ईमानदारी से कार्य करने में सक्षम हों तथा लाखों कमा सकते हो। योग्य उम्मीदवार तुरन्त सम्पर्क साधें, पता है—प्रगतिशील समाजवादी मोर्चा, चम्बल के बीहड़, चम्बल की कसम □

रोटी के चक्कर में

एक बार भगवान विष्णु ने कहा, "हे नारद तुम मृत्युलोक जाओ और वहां क्या हो रहा है देखकर आओ, वहां धर्म और ईश्वर में लोगों की क्या आस्था है ? तथा वे सुख से रह रहे हैं या दुःखी हैं? वहां का राजा कैसा है, सब देखकर आना ताकि मुझे भी तो आदमी के दुःख दर्दों के समाचार मिल सके नारद जी।"

नारद जी ने अपनी वीणा उठाई और चल दिये मृत्युलोककी तरफ। हिमालय से कन्या कुमारी तक का विस्तृत दौरा किया। चूंकि यह क्षेत्र धर्म और ईश्वर भक्ति के लिए विश्व का सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र था। नारद ने रिपोर्ट तैयार की और विष्णु भगवान को दे दी। विष्णु भगवान ने नारद से कहा, "हे ऋषिवर रिपोर्ट तो मैं बाद में पढूंगा पहले तुम बताओ भारत में तुमने क्या-क्या देखा ?" नारदजी बोले, "ईश्वर, संक्षिप्त में वहां जो महत्वपूर्ण बात देखी उस पर एक छोटी सी कविता लिखी है मैंने वह सुनाता हू।

'भारत में एक आदमी रोटी चुपड़ रहा था।
दूसरा रोटी गिन रहा था।
तीसरा रोटी तोड़ रहा था।
चौथा मुंह ताक रहा था और राजा कुर्सी पर बैठा था ? □

रोटी दो फिर

एक भिखारी भूखा प्यासा बैठा था। उसके मुंह से आवाज भी नहीं निकल रही थी। न वह रो रहा था, न वह हंस रहा था। बस झींम रहा था, मैंने सोचा बेचारा मर जायेगा तो···? मैं उसे अपने घर ले आया।

फिर उसे खाना खिलाया, नहाया, धुलाया। वह भला चंगा होकर बातें करने लगा। शाम को हम एक नेता का भाषण सुनने गये साथ में वह भी था।

उसे जाने क्या सूझा, वह उठा और नेता के हाथ से माइक छुड़ा कर भाषण देने लगा। जनता मंत्र मुग्ध थी। नेता भिखारी जैसा लग रहा था ?

दूसरे दिन एक कवि सम्मेलन था। हम उसे वहां भी ले गये। वह कविता सुनाने लगा मंच उसने लूट लिया, सारे कवि भिखारी से बैठे रहे। उसने कहा "हम भूखे हैं इसलिए तुम हम पर लिखते हो। हमें रोटी दो फिर देखो हम तुमसे अच्छा लिख सकते हैं। □

लड़ाई

एक बार जंगल का राजा जंगली भैंसा था। कई बार शेर उससे लड़ा पर वह हर बार जंगली भैंसे से हार गया।

शेर ने दिमाग से काम लिया। उसने जंगल के पशुओं को भड़काया, "भैंसा तुम्हारा धर्म भ्रष्ट कर रहा है···तुम्हें बगावत करनी चाहिए।"

पशुओं ने कहा, "पर शेरजी, वह तो बहुत बलवान है। उससे लड़ना संभव नहीं है।"

शेर ने कहा, "सब इकट्ठे होकर लड़ो।"

बंदर, भालू, ऊंट, हिरन, स्यार सब इस लड़ाई में शामिल हुए। सबने इकट्ठे होकर भैंसे को ललकारा। भैंसा सबको ढेर करने लगा ···ऊंट थोड़ी देर लड़ा, फिर वह भी मारा गया। अन्त में हाथी ने भैंसे के छक्के छुड़ा दिये। अब भैंसा थक गया था पर वह हाथी के बस में नहीं आ रहा था। शेर ने हाथी को थका जान भैंसे पर पीछे से वार किया। भैंसा थक गया था···थोड़ी देर में शेर ने भैंसे को खत्म कर दिया।

फिर शेर ने सबको बुलाकर घोषणा की, "आप सबने मिलकर भैंसे को मार डाला। यह लड़ाई जनता की तानाशाह के साथ लड़ाई

थी। जनता की जीत हुई।"

सबने एक स्वर में शेर को भैंसे की जगह राजा घोषित कर दिया।

शेर मुस्करा रहा था। □

विकलांग

एक दिन काले नाग ने अजगर से कहा, "प्रिय भाई, मैं सर्प जाति में श्रेष्ठ हूं अतः मुझे अपनी जाति का राजा बनवा दो।" अजगर ने सर्प से कहा, "पर भाई तुमको अपने आप पर विश्वास है इतना कि तुम्हीं सबसे श्रेष्ठ हो।" नाग ने कहा "हां, मेरे मुकाबले तुम भी नहीं मेरे पांव नहीं हैं फिर भी सबसे तेज दौड़ता हूं, हाथ नहीं हैं फिर भी सबसे तेज तैरता हूं, और जहर भी इतना है मुझमें कि मेरा काटा हुआ बचता ही नहीं, फिर तुम्हीं बताओ मेरे सिवा कौन है इतना श्रेष्ठ ?"

अज़गर हंसा और बोला, "प्रिय भाई, तुम ठीक कहते हो कि मैं चल नहीं सकता दौड़ नहीं सकता और न ही तैर सकता हूं पर भाई मैं 'निगल' तो सकता हूं…?" अजगर की बात सुनकर काले नाग का चेहरा फक्क हो गया…। □

वेश्या और पुजारी

मंदिर शहर से दूर था। एक वेश्या ने सोचा, चलो आज मंदिर

चला जाये, शायद ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन लें और मुझे इस गंदी जिन्दगी से शायद निकाल दें ! मंदिर में अलसुबह कोई नहीं पहुंचता इसलिए कोई छींटा-कसी भी नहीं कर पायेगा। वह नहा धोकर फूल लेकर मंदिर पहुंच गई। कृष्ण की मनोहारी मूर्ति देखकर उसका चेहरा प्रसन्नता से लाल हो गया। उसने पूजा की और चरण छूकर दुआ मांगी। तभी मंदिर का पुजारी आ गया। उसने पुजारी को देखा तो सहम गई कि कहीं पुजारी ने उसे पहचान तो नहीं लिया ?

वेश्या ने स्वयं ही अपनी गलती स्वीकार कर पुजारी को सब कुछ बताकर क्षमा मांगी। पुजारी जी मुस्करा कर बोले, "बे ··टा··· भगवान के द्वार सबके लिए खुले हैं किन्तु तुम जनता से बच कर ही आया करो अन्यथा···।

कुछ दिन बाद वेश्या अपने कोठे से और पुजारी मंदिर से लापता थे। □

शिक्षा

मेरा लड़का गुड्डू अब पांच वर्ष का है, के० जी० टू में पढ़ता है। एक दिन मेरे मित्र मिश्रा ने उसे एक गोल्ड स्पॉट की बोतल दिलवायी वह लेकर भाग गया और सारे मित्रों को पिला रहा था। सब एक साथ पी रहे थे। मिश्रा मुझसे कह रहा था देखिए समाजवादियों का करतब।

अब गुड्डू बड़ा हो गया और उसका असली नाम वसंत हो गया। अब आठवीं में है, उसे ईमानदारी की, सच बोलने की शिक्षा सबने दी है– मैंने, पत्नी ने और उसकी मैडम एवं गुरुजनों ने। वह उनका

पालन भी कर रहा है।

अब वह पढ़ लिखकर बड़ा अफसर बन गया है। अब वह रोज शराब की बोतल पिलाता नहीं, पीता है। दूसरों से वह रिश्वत और भेंट भी लेता है। मुझे पैसे भी खूब भेजता है और मैं उससे बहुत खुश भी हूं। हां, जब मैं उससे मिलने गया तो वह मीटिंग कर रहा था। इसीलिए मुझसे नहीं मिला। और चपरासी तथा साथियों के पूछने पर उसने मेरा, परिचय दिया था यह हमारे गांव का पुराना खान सामा है।

□

स्खलन

हर देश में क्रांतियां हुई लेकिन 'धर्म देश' में आज तक कभी कोई क्रांति नहीं हुई। सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य है, इस पर अन्य देश वालों को बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने 'धर्म देश' के राजा से इसका 'राज़' पूछा। धर्मदेश का राजा हंसा और फिर बोला, "भाइयो, इसका मूल कारण मेरे पास है, मेरे दिमाग के पास है, ऐसा नहीं है कि मेरे देश में 'आक्रोश' नहीं है! है, पर उस आक्रोश का स्खलन मैं बड़ी होशियारी से करवा देता हूं।

'आक्रोश' सिर्फ युवा लड़की का खतरनाक होता है, सो उनके लिए मैंने मनोरंजन के कई साधन अपने देश में मुहैया करा दिये हैं। जैसे— सिनेमा, वी० डी० ओ०, टी० वी०, कैबरे आदि।

जब वे आक्रोश में होते हैं तो मेरे लोग उन्हें फोरन रंगीन फिल्म दिखा देते हैं और इस तरह वे आक्रोश की समाधि से संभोग के पूर्व ही स्खलित हो जाते हैं। आज कल मेरे देश के युवा अपनी चढ्डी में

अपने देश का नक्शा बनाने में लगे हैं, तब क्रान्ति कौन करेगा, यार ?' बच्चों और बूढ़ों को कैरोसिन की लाइन में लगा दिया है और मैंने निश्चिंत हूं सदा-सदा के लिए। मैं जानता हूं वे अपनी आत्मा को किल कभी नहीं कर सकता फिर कत्ले आम का सवाल ही नहीं उठता। वे अपनी आत्मा को और अपने भगवान् को कभी नहीं बेच सकते और तब तक मैं शान्ति से उन पर राज्य करता रहूंगा। कभी कभार कोई इक्का-दुक्का अपनी आत्मा को किल कर भी देता है, तो वह सुविधा-भोगी बन जाता है या डाकू, तो इनका भी हमने आत्म-समर्पण करवा दिया है। □

स्वयंवर

एक बार एक जगह स्वयंवर रखा गया जिसमें पसन्द की शर्त यह रखी गई कि जिसे जो लड़की पसन्द करेगी उसे उस लड़की के साथ शादी करनी होगी।

स्वयंवर में तीन लड़कियां थीं··एक गांव की अनपढ़ लिड़की थी, एक शहर की पढ़ी-लिखी लड़की थी पर मध्यम परिवार की और तीसरी पढ़ी-लिखी रईस की लड़की थी।

तीनों ने चयन कुछ इस प्रकार किया—

गांव की लड़की ने एक मोटे-ताजे युवक को पसन्द किया। मध्यम परिवार की पढ़ी-लिखी लड़की ने एक मास्टर को पसन्द किया था रईस की लड़की ने एक रईसजादे को ही पसन्द किया था।

कुछ समय बाद उन तीनों को बुलाया गया। गरीब की लड़की

के छः बच्चे थे। मध्यम परिवार वाली के दो बच्चे थे। रईस की लड़की निःसन्तान थी।

□

सच से साक्षात्कार

एक दफ्तर में एक पद बाबू का खाली था। इन्टरव्यू दफ्तर के बाबू हरिश्चन्द्र साहब ले रहे थे।

पहला आवेदक हाजिर होता है। हरिश्चन्द्र ने मूंछ पर हाथ फेरते हुए टाई को सुधारा फिर पहले आवेदक से पूछा, "तुम्हारा परिचय अपना नाम, बाप का नाम बताओ।" पहला आवेदक बोला, "सर, मुझे 'आत्म-सच' कहते हैं !

मेरे बाप का नाम हरिश्चन्द्र है मैंने अपनी 'आत्मा' को कभी 'किल' नहीं होने दिया। बस, शरीर को 'किल' करता रहा हूं। हरिश्चन्द्र बोले, "पर हमें तो तन, मन दोनों से स्वस्थ और सुन्दर आवेदक चाहिए, ठीक है आप जा सकते हैं।" दूसरा आवेदक आता है उनके चेम्बर में। हरिश्चन्द्र उसे देखकर गदगद हो गए और बोले, "अपना नाम परिचय देंगी।

वह बोली, "मुझे जिस्मानी 'सच' कहते हैं मेरी उम्र सिर्फ सोलह साल की है। मैं पूर्णतः पवित्र हूं।" हरिश्चन्द्र बड़बड़ाए, "लेकिन अठारह साल से नीचे तो नहीं चलेगा सरकारी काम है, मेरा निजी वर्क तो है नहीं।" "सर, उम्र का क्या है। औरत की उम्र नहीं शरीर देखना चाहिए। आप शाम को अपने बंगले पर मेरी उम्र बढ़ा दीजिए न··· प्लीज।" हरिश्चन्द्र की आंखों में अजीब चमक आ गई थी। बोले, "ठीक है, ठीक है। ठीक है आप शाम को मेरे बंगले पर आ जाइए। मैं पूरा

रिकार्ड देख लूंगा। अच्छा ओ० के०।" हरिश्चन्द्र का सलेक्सन हो चुका था। उन्होंने बाकी आवेदकों को लाइन में खड़ा किया, और नाम, बाप का नाम पूछना शुरू कर दिया।

तीसरा आवेदक बोला, "सर मुझे 'अदालती-सच' कहते हैं। मैं एल० एल० बी० तक पढ़ा भी हूं।"

चौथा आवेदक बोला, "सर मुझे 'नंगा-सच' कहते हैं, पांचवां आवेदक बोला, "सर मुझे 'झूठ में लिपटा-सच' कहते हैं।" छठा आवेदक बोला, "सर, मुझे सच-में-लिपटा फरेब कहते हैं।"

हरिश्चन्द्र बोर होकर बुदबुदाए, "हाउ मैनी काइन्डस-ऑफट्रुथ। ओ गॉड हेल्प मी ! प्लीज, हेल्प मी इन दिस इवनिंग···। □

सत्ता-परिवर्तन

अजगर ने 'शेर' को निगल कर सत्ता परिवर्तन की घोषणा कर दी। जंगल के सारे पशुओं ने एक स्वर से शेर की जगह अजगर को अपना नेता मान लिया। अजगर ने कहा, "भाई मैं न चल सकता हूं, न दौड़ सकता हूं और न तैर सकता हूं। मेरे पास न हाथ है और न पांव। मैं तो बस विकलांग हूं। अतः आप लोगों के सहयोग से ही मैं प्रजातन्त्र और लोकतन्त्र को साकार कर सकता हूं। अतः तुम्हारा सहयोग मुझे मिलना चाहिए।" सब पशुओं ने सहयोग देने का वादा किया। अजगर ने मंत्रिपरिषद् का गठन किया तो सबसे पहले कुत्ते को अपने बाद श्रेष्ठ पद दिया चूंकि कुत्ता चाट-चाट कर घाव ठीक कर देता था···और 'घाव' अजगर की जिंदगी और मौत का

सवाल था। इसलिए अजगर कुर्सी पर बैठा रहता और कुत्ता सभाओं में जोरों से भूंकता रहता···। □

संजीवनी का भविष्य

एक जगह गाजर घास, सदाफुली और बेशरम तीनों के पौधे लगे थे। वे तीनों सहेलियां थीं, पर तीनों का स्वभाव भिन्न था। गाजर घास ने सदाफूली से कहा, "सखि अब तो लोग मेरा वंश ही खत्म करने में लगे हैं, तुम सौभाग्यशाली हो कि अब तुम्हारा महत्व लोग समझ गए हैं। अब तुम्हारा वंश बढ़ायेंगे, पर सहेली मेरा वंश तो अब समाप्त हो जायेगा।

सदाफूली ने कहा, "बहन तुम्हारा वंश रावण के वंश जैसे जल्दी जल्दी बढ़ गया था और 'अति सर्वत्र वर्जते' कहा गया है। तुमने एलर्जी पैदा करना शुरू कर दिया। लोगों को एलर्जी हो गई और उसकी प्रतिक्रिया जो होनी थी वहीं हुई। लोग तुम्हारा वंश मिटाने लगे। पर तुम निश्चिन्त रहो तुम्हारा वंश खत्म नहीं होगा। रावण का वंश तो खत्म हो गया पर वह प्रवृत्ति अभी तक जिंदा है। यही नहीं दिनों दिन बढ़ रही है। भीतर से सब रावण हैं। बाहर से राम का मुखौटा रखे हैं, ज्यादा सभ्य हो गये हैं न···?" तभी बेशरम से रहा नहीं गया, वह बोली, "बहन, "कैंसर" से भी बड़ा रोग जब होगा तब उसका उपचार मेरे द्वारा होगा। अभी मेरे गुणों को भारत के नेता ही जानते हैं। जिस दिन जनता मेरे गुणों को समझ लेगी उस दिन मैं ही 'संजीवनी बूटी' राष्ट्रीय पौधा रहूंगी। यह बात बराबर मुझसे वैज्ञानिक नहीं, नेता कह रहे हैं कि भविष्य तुम्हारा है। □

सपना

मैं उसे दिन में सपनों की तरह देखता रहता हूं। रात में वह एक हसीन सपना कमसिन होकर लजा जाता है और मैं बच्चों सा सोता-सोता हंसता रहता हूं। सपना मुझे आंख-मारकर गायव हो जाता है। दिन में वह स्वेटर बुनती रहती है और मैं सपने बुनता रहता हूं। पलंग निवार के लिए और खटिया रस्सियों की बुनावट के लिए तरसते रहते हैं। मैं सपनों को रस्सियों की तरह बाटने लगता हूं और वह जमीन की तकली से सूत काततो रहती है। लेकिन खद्दर भी वक्त पर नाक भौंह बनने लगते हैं। तब मैं देश के नक्शे में खो जाता हूं। और वह कहां खो जाती है मुझे नहीं मालूम, पर वह बच्चों के फटे पेंट में चिगड़ों के चंदोये बड़े सलीके से जड़ने लगती है।

वह चिड़ियों की तरह एक-एक तिनका सलीके से उठा-उठा कर घोंसला बनाने लगती है। और मैं चिड़वों की तरह कहां बैठ जाता हूं आप भली भांति जानते हैं। पर मैं और वो हम बनकर भी एक अच्छा घोंसला तंयार नहीं कर पाते हैं। चिड़वा मुझ पर नहीं उस पर हंसता है। और चिड़िया मुझे रौव के साथ देखता है।

मैं मशीन की तरह—मशीन में खो जाता हूं दिनभर दफ्तर में यंत्रवत् चलता फिरता रहता हूं। फाइलों में दव जाता हूं। फाइलें यदि दुम के भीतर रख ली जायें तो शक्ति देती हैं। पुण्य-कमल खिल जाता है। पर फाइलें अपनी जगह पर रहेंगी, तभी तो मैं अपनी जगह पर रहूंगा। जो जहां होना चाहिए वो वहां न रहे तो कहते हैं लोगों को सुख नहीं मिलता। पर आज कल सुख—जगह पर नहीं अन्यत्र ही

रहता है। इसलिए लोग अपनी-अपनी जगह पर नहीं मिलते, और जो मिल जाये वो मारा जाता है।

मेरी वो भी अपनी जगह पर यानी घर में तैनात है। वह अपने मोर्चे पर, और मैं अपने मोर्चे पर, बराबर लड़ रहे हैं। लड़ाई इसी बात पर है ! दूसरों से हम माह के तीस दिन तक लड़ कर भी पहली तारीख को हार जाते हैं।

कुछ लोग बिना लड़े हर बार जीतते रहते हैं। शायद वे खुश रहते हैं। लड़ाई अब रोजी-रोटी की है। रोटी, कपड़ा और मकान की है। पर इसमें भी कितने जीत पा रहे हैं। जीत वे रहे हैं, जो लड़ ही नहीं रहे। जो लड़ रहे हैं, वे तो मरेंगे ही चाहे किश्तों में मरें, चाहे एक मुश्क मरें। हम सोकर भी चेहरे की सलवटें नहीं बदल पाते। लोग चादर की सलवटें भी नहीं रहने देते। □

साथ लेकर जाऊंगा

उस रेस्टोरेन्ट का एक बैरा धीरे-धीरे मेरा मित्र बन गया था। अक्सर वह मुझसे प्यारी-प्यारी बातें किया करता था। एक दिन मैंने भी उससे उसकी व्यक्तिगत बातें पूछ ही लीं कि, "उसकी शादी हुई या नहीं, होगई तो बाल-बच्चे कितने हैं आदि आदि···" उसने कहा, "साहब मेरे दो बच्चे हैं बीवी है।" "पर तुम ऐसे लगते नहीं बिलकुल नई उम्र के स्मार्ट हो।" वह केवल मुस्करा दिया था। फिर उसने अपने बारे में बताया, "साहब इसके पूर्व भी मैंने कई होटलों, रेस्टोरेन्टों में काम किया है। और वहां साहब बेईमानी मुझे बरदास्त नहीं

हुई और यहां चला आया। हां ग्रयाहकों के साथ ईमानदारी है इसी लिए टिका हुआ हूं।

पर यहां भी टिप के लिए पगड़ी शेयर सिस्टम है, फिर बिना टिप के कम तनख्वाह में बच्चों को पालना भी तो मुश्किल है.

अभी एक हैड बैरे ने तो बड़ा कमाल कर दिया था। उसने मरने के पहले बड़ा भव्य बंगला बना लिया था। किसी को नहीं मालूम था कि उसने बंगला बनाया है। "कम से कम बच्चों के लिए पेट भरने को कुछ तो छोड़ गया।" मैंने कहा। "हां साहब दो हजार रुपये किराये के मिल जाते हैं उसकी पत्नि को कुछ हिस्से में खुद रहती है। बच्चे कान्वेंट स्कूल में पढ़ रहे हैं।" मैंने पूछा, "तुम क्या छोड़ोगे बच्चों के लिए।" वह बोला. "साहब मैं कुछ नहीं छोड़ूंगा जाते वक्त···कुछ नहीं हां और जो कुछ है भी उसे भी साथ ले जाऊंगा।" मैंने आश्चर्य से पूछा, "वो क्या ?"

वह हंसकर बोला, "साहब मेरे पास सिर्फ 'ईमान' है बस उसे कौन लेगा ? इसलिए उसे साथ लेकर जाना ही अच्छा है, अन्यथा लोग उसे बिगाड़ देंगे।

□

सीखो

"हलो···रोजगार अधिकारी हैं ?"

"जी बोल रहा हूं।"

"देखो, मैं श्रम मंत्री बोल रहा हूं।"

"सर नमस्ते, कहिए कैसे कष्ट किया ?"

"देखो—एक लड़की को मैंने तुम्हारे दफ्तर में भेजा है उसका

नाम एफ० सी० आई० में भेज दो।"

"सर ? वह मेरे पास ही बैठी है, पर वह ओवर-एज हो गई है। और नियोजन ने 25 वर्ष से कम वाले आवेदक चाहे हैं।"

"अरे भाई, मैंने उनके जनरल मैनेजर से बात कर ली है, तुम्हारा क्या बिगड़ता है भेजने में। और समझ से यहां रहना है तो···" कह कर टेलीफोन रख दिया जोर से।

ठीक आठ दिन बाद उक्त अधिकारी के हाथों में ट्रांसफर आर्डर था और लड़की के हाथ में अपाइन्टमेंट आर्डर। लड़की हंस रही थी, "साहब काम करना सीखो। अभी तुम्हारी नई उम्र है, मैंने तुम्हारे बूढ़े मन्त्री से एक झलक में···।" □

सोन मछली

सोन नदी की मछलियां तड़मड़ा कर मरी जा रही थी। सारी मछलियों ने हड़कम्प मचाया हुआ था क्या हो गया होगा पानी में जो हमारी जान का दुश्मन बन गया है। पानी से बाहर भागने पर भी मरना ही है। अतः उन्होंने पानी में ही मरना बेहतर समझा। सभी मछलियां तड़फड़ा कर ढेर हो गई। अब मरी हुई मछलियां बहकर नीचे पहुंचीं तो नीचे की मछलियों में भी हड़कम्प मच गया। "हमारी ऊपर रहने वाली बहनें कैसे मर गई हैं ?"

क्यों मर गई। सैकड़ों सवाल उनके दिमाग में उठे थे। तभी कुछ अधमरी सी मछमलियां बोली, "बहनो ! तुम भी यहां से भागकर और नीचे चलो वरना तुम्हारी जिन्दगी भी खतरे में पड़ सकती है। सारी

मछलियां बहुत नीचे पहुंच गई थीं। अब वे सब इकट्ठा होकर सोच रही थीं कि क्या हो गया है पानी को और हमें क्या कदम उठाना चाहिए। कुछ श्रेष्ठ सोन-मछली इस बात का पता लगाने निकलीं कि आखिर माजरा क्या है। तो उन्हें पता चला कि अमराव पेपर मिल का दूषित पानी जहर है, सोन नदी में मिला है वहीं से पानी प्रदूषति हो गया है उसके उक्त क्षेत्र का जल ठीक-ठाक तथा ऊपर की मछलियां स्वस्थ हैं, केवल क्षेत्र किलोमीटर नीचे तक की मछलियां ही मरी हैं चूंकि दूषित जल का प्रभाव नीचे बना है। अब सारी मछलियों ने उस क्षेत्र में न रहने की और न ही उधर जाने की घोषणा कर दी।

एक बूढ़ी मछली ने सोन मछली से कहा, "पर बहन वहीं मनुष्य उस क्षेत्र का पानी न पी ले वरना अनर्थ हो जायेगा!" सोन मछली ने कहा, "हां वे भी प्रभावित तो होंगे ही चूंकि आदमी की शारीरिक संरचना हमसे सुदृढ़ है। अतः वे मरेंगे तो नहीं पर वे घातक बीमारियों के शिकार जरूर होंगे।" एक मछली बोली, "पर बहन कोई भी आदमी उसके खिलाफ नहीं बोला है। जबकि आदमी को पहले ध्यान रखना चाहिए था।" सोन मछली बोली, "बहन! ऐसा है, आदमी बहुत हताश और उदासीन हो गया है अतः अब तभी बोलता है जब खुद पर खतरा आता है। वह दूसरों के खतरों को नजरअन्दाज कर देता है; वरना हमसे ज्यादा जागरूक तो उसे रहना चाहिए था।" तभी नदी के किनारे का एक बूढ़ा पेड़ बोला, "हां बहनों, तुम सही कहती हो। अब देखो न हम पेड़ पौधे प्रदूषण तो रोकते हैं। खुद उस ज़हर को पीते हैं फिर भी मनुष्य हमें काटने में लगा है।

एक पेड़ बोला, "देखो भाई, हमारा तो जीवन ही आदमी के लिए है हमें तो उसी के लिए जीना-मरना है। पर वह कुछ इस दिशा नें सोचता ही नहीं और तो और नन्हे-मुन्नों को भी नहीं छोड़ रहा है। हम अपने भविष्य के लिए चिन्तित हैं और आदमी को न हमारी चिन्ता